चकमक

मई, 1993 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 5.00

क्षिप्रा : असलियत कुछ और है।

प्रकाश राय, पिपरिया, होशंगाबाद, म. प्र.

अलिंद, सातवीं, काशीपुर, नैनीताल, उ. प्र.

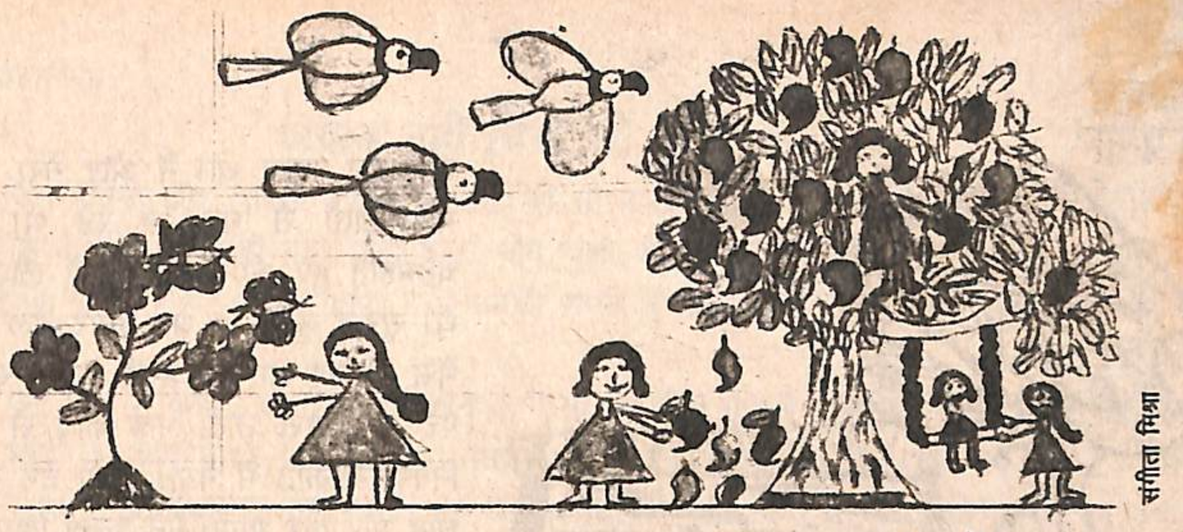

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-8 अंक-11 मई, 1993
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास
कला-सज्जा
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक ख़र्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ़्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन : 563380

काग़ज़ : यूनिसेफ के सौजन्य से।

इस अंक में

विशेष

15 ☐ क्षिप्रा : प्रदूषण की मारी एक नदी

कविताएं

6 ☐ बाग हँस पड़ा
27 ☐ ढेंचू! ढेंचू!!

कहानियां

7 ☐ कुत्ता चला घोड़े का शिकार करने!
25 ☐ बंटवारा

धारावाहिक

34 ☐ जंगलनामा-अंतिम किस्त

हर बार की तरह

2 ☐ मेरा पन्ना
14 ☐ हमारे वृक्ष-15 : काजू
26 ☐ खेल पहेली
28 ☐ खेल काग़ज़ का
32 ☐ माथा पच्ची
40 ☐ चित्रकथा

और यह भी

10 ☐ तुम भी बनाओ
12 ☐ सवालीराम
30 ☐ चर्चा किताबों की

आवरण : उज्जैन में क्षिप्रा नदी के रामघाट पर दीपदान का एक मोहक दृश्य। लेकिन यह तस्वीर का सिर्फ़ एक पहलू है। दूसरा पहलू है-प्रदूषित क्षिप्रा नदी का। पढ़ो, इसी अंक में इसका एक विवरण। फोटो- के.आर. शर्मा

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

डर

शोभा, छठवीं, राजाबरारी, टिमरनी, म.प्र.

शाम का समय था। मैं और मेरा छोटा भाई खेतों से घर आ रहे थे। पक्षी चहचहाते हुए अपने घोंसलों में लौट रहे थे। सूरज डूब रहा था। हमारे बैल और भैंस भी घर आ गए। हमने उनको खनौटे पर बांधा मेरा छोटा भाई कौड़े से भूसा निकालने कोठे में गया। थोड़ी देर में वो धाड़ मार कर भागा। मैने हल्ला किया कि क्यों फालतू में चिल्ला रहा है। उसने कहा कि कोठे में कोई है। ऊपर से भूसा गिराया है। डर तो मेरे मन में भी था। चिमनी जलाई, फिर चारों ओर देखा। कोई नहीं था। भूसा गिरा देखा तब मेरी समझ में आया कि जब नीचे से भूसा निकाला होगा तो ऊपर का भूसा भरभराकर नीचे गिरा होगा। मुझे ख़ूब हंसी आई, मेरे भाई को भी हंसी आई। हमने तय किया कि इस तरह नहीं डरेंगे।

❑ रामप्रसाद धाकड़, सातवीं, तिलौंजरी, मुरैना, म.प्र.

कान में खुजली

मेरे कान में खुजली हुई
मैंने ली माचिस की तीली
कान में ख़ूब
घुमाई माचिस की तीली
मेरे कान में जख़्म हुआ
हो गया मैं परेशान
मैंने माता-पिता को बताया
मेरा दुख रहा है कान

इसके बाद क्या हुआ
सुन लो मेरे भाई
डॉक्टर के पास जाकर ली दवाई
डॉक्टर ने लिया दस का नोट
फिर मैं आया घर को लौट
भैया तुम भी रखना ध्यान
तीली से बिगड़ जाएगा कान।

❑ दलजीत सिंह सिक्ख, गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म.प्र.

दो कहानियां

जवाब नहीं दिया तो मार पड़ी

एक दिन अर्चना और भारती स्कूल जा रही थीं तो रास्ते में वर्षा होने लगी। वो दोनों एक पेड़ के नीचे खड़ी हो गईं। दोनों बहुत भीग चुकी थीं। उन दोनों को सर्दी लग गई थी। पानी बंद हुआ तो दोनों वापस घर लौट गईं। उनकी मम्मी ने उन्हें देखा तो बोली, "स्कूल क्यों नहीं गईं।"

उन दोनों ने कहा, "रास्ते में वर्षा होने लगी तो हम भीग गए थे, इसलिए वापस आ गए।"

थोड़ी देर बाद उनके पापा आ गए। उन्होंने पूछा, "तुम लोग स्कूल क्यों नहीं गईं?"

वे दोनों मुंह लटकाए खड़ी रहीं। उन दोनों ने जबाव नहीं दिया तो पापा को गुस्सा आ गया और उन्होंने अर्चना और भारती को बहुत मारा। वो दोनों बहुत रोईं।

सुनीता आम के पेड़ से गिरी

एक दिन सुनीता और मैं स्कूल से आ रहे थे। सुनीता से मैंने कहा, "आज हम बगीचे में आम खाने जाएंगे।"

सुनीता ने कहा, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

मैंने हां कर दी। हम तीन बजे जाने वाले थे परंतु हम सुनीता के लिए रुके थे। थोड़ी देर बाद सुनीता आ गई। हम बगीचे की ओर चल पड़े। सुनीता और मैं ख़ूब मस्ती करते जा रहे थे। मम्मी ने हमें बार-बार डांटा। हम बगीचे में पहुंचे तो मैं पेड़ पर चढ़ गई। सुनीता मेरी मम्मी से कहने लगी, "मुझे पेड़ पर चढ़ा दो।"

मम्मी ने सुनीता को पेड़ पर चढ़ा दिया। सुनीता आम तोड़कर खाने लगी। मैंने उससे एक आम मांगा उसने नहीं दिया। हम आपस में लड़ने लगे। सुनीता ने मुझे मारा। मैंने उसे नीचे धकेल दिया। उसे बहुत चोट आई।

चित्र तथा कहानियां : दीपमाला मंडलोई, सातवीं, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

हरदा की सड़कें

मेरा पन्ना हमारे हरदा की सड़कें बिल्कुल एक्सप्रेस गाड़ियों के लिए बनी हैं। जिस प्रकार पेरिस कांच की सड़कों के लिए प्रसिद्ध है, उसी प्रकार हरदा की सड़कें दचकों के लिए प्रसिद्ध हैं। लगभग तीन-चार वर्ष पहले हरदा की सड़कों की हालत केवल एरोप्लेन (हवाई जहाज़) के लिए थी। किंतु लोगों के आग्रह पर इसे खुला-सा कर दिया गया। हमारे यहां जब लोगों का आग्रह अधिक हुआ तो सड़कों का पुनः निर्माण किया गया। सड़कें तो बनवा दी गईं किंतु ऐसी कि अस्पताल 'हाऊसफुल' हो गए। सड़कें जगह-जगह से दब गईं। लोगों को शायद अब सायकल में भी शॉकअप की ज़रूरत पड़ेगी। लगता है मुझे मैट्रिक पास कर शॉकअप की दुकान खोलनी पड़ेगी। राज़ की बात है किसी को बताना नहीं। नहीं तो मैं और मेरे आने वाले (भविष्य में) बीबी बच्चे भूखे रह जाएंगे। कृपया ध्यान रखें। हरदा में अभी ऐसी सड़कें बाक़ी हैं जिसमें से वाहन ले जाने पर 'आटोमेटिक सुपर म्युज़िक' निकलता है।

यह व्यंग्य आपको पसंद आए न आए किंतु हरदा की सड़कों पर से आप लोग बचकर निकलना।

❑ राजेश सिंह राठौर, नौवीं, हरदा, म.प्र.

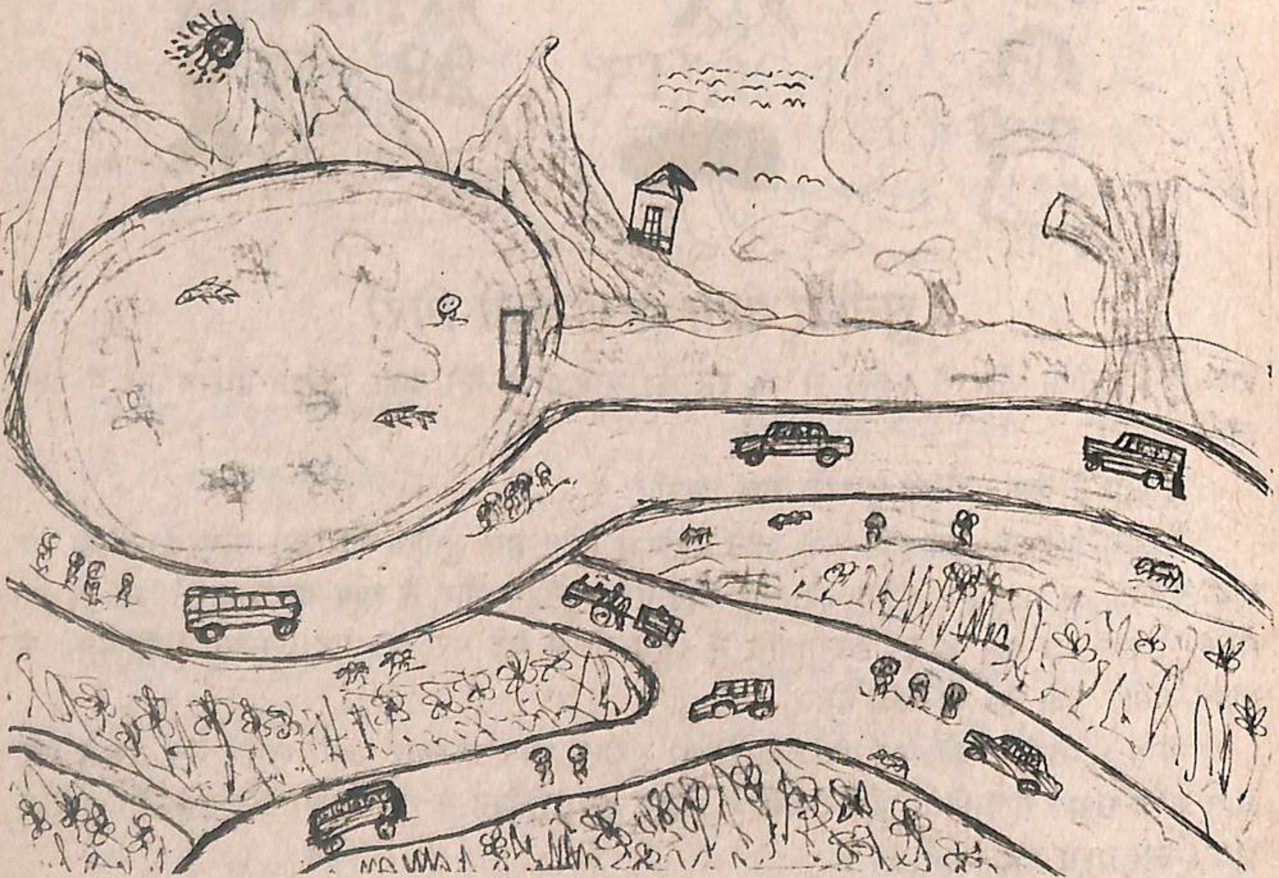

उमेश कुमार, करकटी, शहडोल, म.प्र.

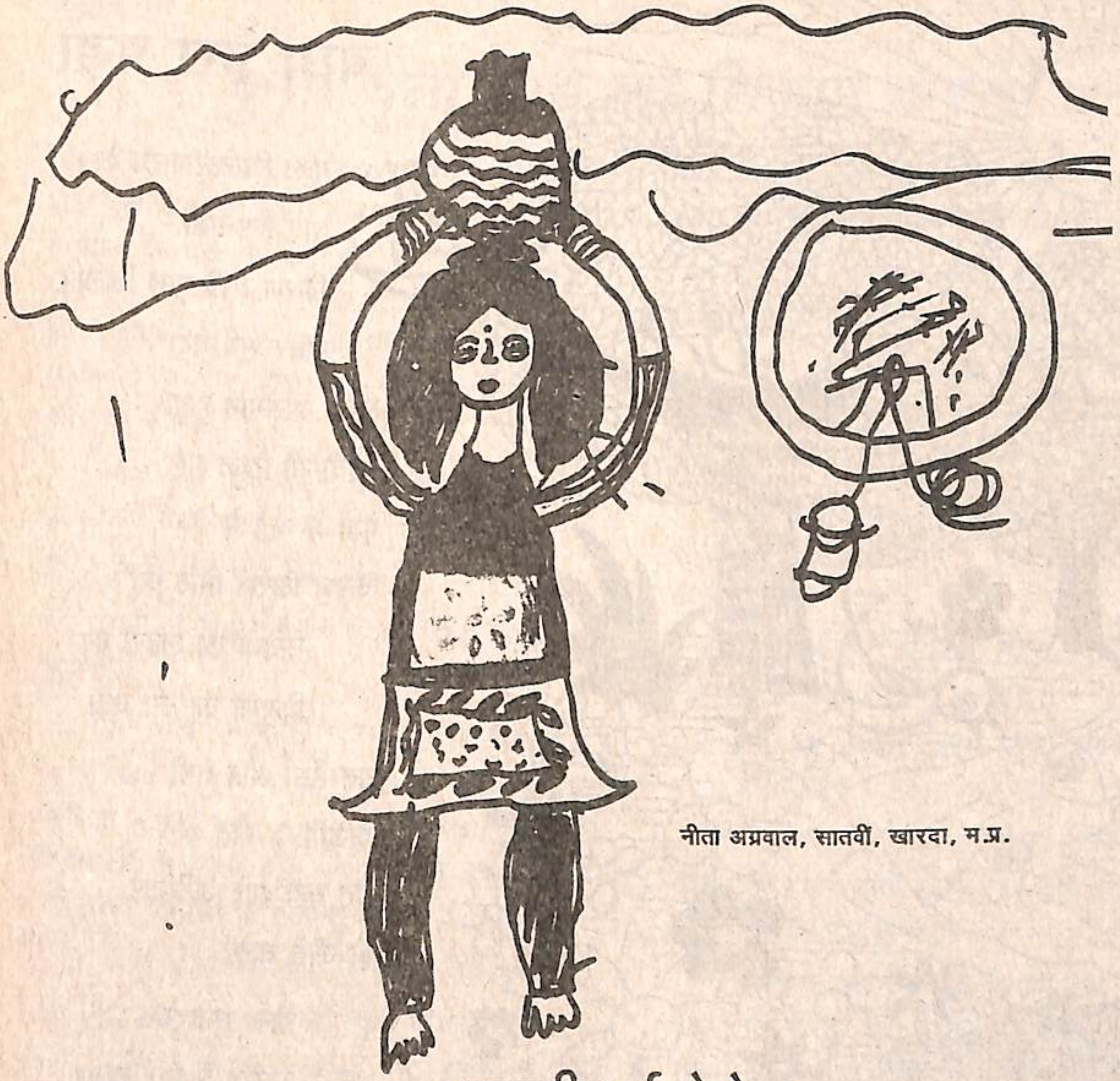

नीता अग्रवाल, सातवीं, खारदा, म.प्र.

लड़की हुई बेहोश

दो-तीन लड़कियां कुएं से पानी भरने गई थीं तो उन लड़कियों में से एक को सर्प ने काट लिया। मैं कुएं पर पानी भरने गई तो मैंने देखा कि वह लड़की बेहोश हो गई है। मुझे स्कूल को देरी हो रही थी। मैंने सोचा कि आज स्कूल नहीं जाना चाहिए। उस लड़की को उसके घर तक ले जाना चाहिए। मैं उसको घर ले गई। तो उसके माता-पिता ने समझा कि वह लड़की मर गई।

उसके माता-पिता ने पूछा कि, बेटी तुमने कहां देखा कि यह लड़की बेहोश हो गई थी। मैंने कहा कि, मैं कुएं पर पानी भरने गई-थी। तो मैंने देखा कि वह बेहोश पड़ी थी। इसलिए मैंने सोचा कि उसको घर ले चलूं। मुझे घर का पता नहीं था। मैंने एक लड़के से पूछा कि इस लड़की का घर कहां है। उसने कहा कि मंदिर के पास है। तो मैं उसे घर ले आई।

मेरी मम्मी ने कहा कि तुम्हें इतनी देरी कैसे हो गई है। मैंने कहा कि एक लड़की कुएं पर बेहोश पड़ी थी। मम्मी ने कहा कि तुम्हें डर नहीं लगा। मैंने कहा कि किस बात का। मेरी मम्मी प्रसन्न हो गई।

□ निर्मला जैन, सातवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

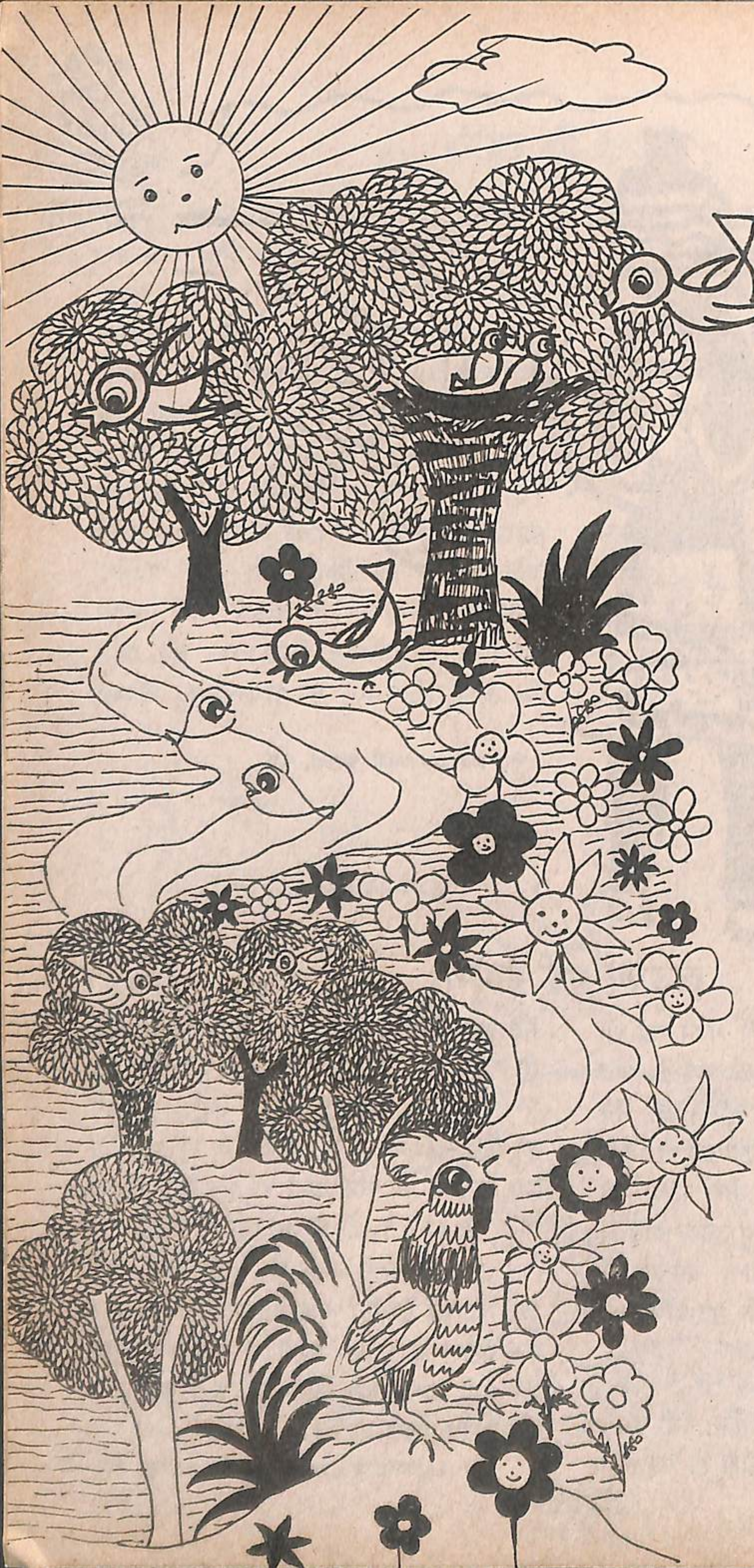

बाग हँस पड़ा

फूल खिले रंग रंग के
बाग हँस पड़ा
किरण चली फूल खिलाने
उधर सूर्य बढ़ा
लाल आसमान हुआ
मेंहदी-सी खिल गई
पेड़ों में पत्तों में
किरण किरण मिल गई
नदिया की लहरों पर
किरणों का रंग चढ़ा
प्रात हँसा और तभी
चिड़ियों के गीत चले
गीत यही सारे अंधियारे
को जीत चले
बोल सुना रात
भगाता है मुर्गा खड़ा
समय सुबह का है
तन-मन ताजा अपना है
रातों का स्वप्न नहीं
दिन का यह सपना है
सूरज के सोने से
सारा संसार मढ़ा
फूल खिले रंग रंग के
बाग हँस पड़ा।

❑ डॉ. श्रीप्रसाद

चित्र : जया

कुत्ता चला घोड़े का शिकार करने!

किसी समय कहीं एक किसान रहता था। उसके पास एक कुत्ता था। जब तक वह जवान था अपने मालिक के घर की रखवाली करता रहा। लेकिन जब बूढ़ा हो गया तो मालिक ने उसे घर से निकाल दिया। कुत्ता मैदानों में घूमता, चूहे और अन्य जो भी छोटे-मोटे जानवर हत्थे चढ़ जाते, उन्हें पकड़ता और खा लेता।

एक रात को उसने एक भेड़िए को अपनी ओर आते देखा।

"कहो भाई कुत्ते, क्या हालचाल है?"

कुत्ते ने शिष्टतापूर्वक जवाब दिया, "ख़ुदा का शुक्र है।"

तब भेड़िए ने पूछा, "किधर जा रहे हो?"

"जब मैं जवान था," कुत्ते ने बताया, "मेरा मालिक मुझको बहुत चाहता था। मैं उसके घर की रखवाली जो करता था। मगर अब मैं बूढ़ा हो गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया।"

"ख़ैर कोई बात नहीं, तुम्हें भूख लगी होगी?"

"हां, भूख तो लगी है," कुत्ते ने जवाब दिया।

"तो चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें भर-पेट खिलाऊंगा।"

कुत्ता भेड़िए के साथ चल दिया। वे एक मैदान में से जा रहे थे। भेड़िए ने चरागाह में भेड़ों का एक रेवड़ देखा तो कुत्ते से बोला, "ज़रा जाकर देखो कि चरागाह में कौन-से जानवर चर रहे हैं।"

कुत्ते ने जाकर देखा और झटपट आकर बोला, "भेड़ें हैं।"

"भाड़ में जाएं कंबख़्त भेड़ें! उन्हें खाने से दांतों में ऊन ही ऊन चिपक जाएगा और पेट रहेंगे ख़ाली के ख़ाली! चलो, आगे चलें!"

सो वे आगे चल दिए। वे चलते गए, चलते गए और तब भेड़िए को मैदान में हंसों का एक झुंड दिखाई दिया।

भेड़िए ने कुत्ते से कहा, "ज़रा जाकर देखो तो कि चरागाह में वे कौन-से जानवर हैं।"

कुत्ते ने जाकर देखा और झटपट आकर बोला, "हंस हैं।"

"भाड़ में जाएं कंबख़्त हंस! अगर हम उन्हें खाएंगे तो हमारे दांतों में पंख ही पंख चिपक जाएंगे और पेट रहेंगे ख़ाली के ख़ाली!"

वे आगे चल दिए। वे चलते गए, चलते गए और तब भेड़िए को चरागाह में एक घोड़ा नज़र आया। उसने कुत्ते से कहा, "ज़रा जाकर देखो कि चरागाह में यह कौन-सा जानवर चर रहा है।"

कुत्ता गया और झटपट आकर बोला, "घोड़ा है।"

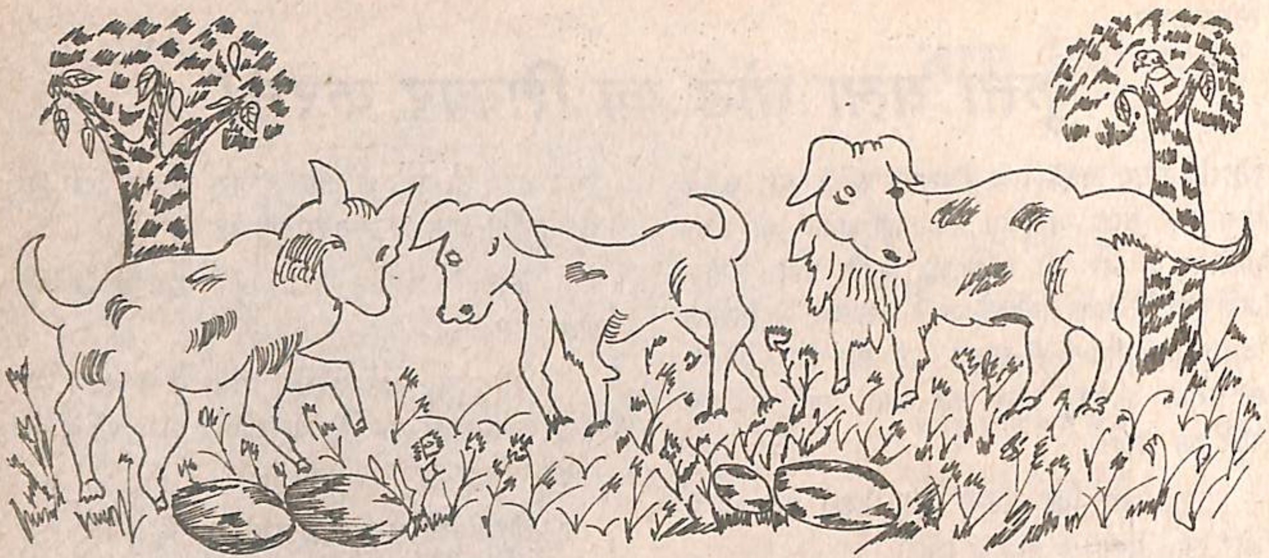

"इसे हम खाएंगे!" भेड़िए ने कहा।

सो वे घोड़े की ओर दौड़े। भेड़िए ने ज़मीन पर अपने पंजे रगड़े और दांत किटकिटाए ताकि वह पूरी तरह आग-बबूला हो जाए।

तब उसने कुत्ते से कहा, " यह बताओ कि मेरी दुम ज़ोर से हिल रही है?"

कुत्ते ने देखा और कहा कि, "वास्तव में ही ज़ोर से हिल रही है।"

"और अब यह बताओ कि मेरी आंखें अंगारा हो गई या नहीं?"

"हो गई हैं," कुत्ते ने जवाब दिया।

तब भेड़िया झपटा और उसने घोड़े को गरदन से पकड़कर ज़मीन पर नीचे गिरा दिया और उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। भेड़िए और कुत्ते ने घोड़े के मांस को मज़े ले-लेकर खाना शुरू किया। भेड़िया जवान था और उसने जल्द ही अपना पेट भर लिया। मगर कुत्ता तो बूढ़ा था, इसलिए दांतों से काटता रहा, काटता रहा और फिर भी बहुत ही कम खा पाया। तभी दूसरे कुत्ते दौड़ते हुए यहां आ पहुंचे और उन्होंने इस बूढ़े कुत्ते को दूर भगा दिया।

कुत्ता फिर से आगे चल दिया। तब उसने अपने ही जैसा एक बूढ़ा बिल्ला अपनी तरफ आते देखा। बिल्ला चूहों की तलाश में मैदान में घूम रहा था।

"कहो भाई बिल्ले, क्या हाल-चाल है?" कुत्ते ने कहा। "किधर जा रहे हो?"

"जिधर भी रास्ता ले जाए। जब मैं जवान था तो चूहे पकड़कर अपने मालिक की सेवा करता था। अब जब मैं बूढ़ा हो गया हूं, मेरी फुर्ती जाती रही और नज़र कमज़ोर हो गई तो मालिक ने मुझे खिलाना-पिलाना बंद कर दिया और घर से निकाल बाहर किया। अब मैं दुनिया की ख़ाक छानता फिर रहा हूं।"

"तो मेरे साथ चलो, भाई बिल्ले," कुत्ते ने कहा। "मैं तुम्हें भर पेट खाने को दूंगा।"

कुत्ते ने वही कुछ करने की ठान ली थी जो भेड़िए ने किया था।

चुनांचे कुत्ता और बिल्ला एक साथ चल दिए।

वे चलते गए, चलते गए और तब कुत्ते को चरागाह में भेड़ों का रेवड़ नज़र आया। उसने बिल्ले से कहा, "भाई, ज़रा जाकर देखो कि चरागाह में वे. कौन-से जानवर हैं।"

बिल्ला गया, उसने देखा और झटपट आकर बताया, "भेड़ें हैं।"

"भाड़ में जाएं कंबख़्त भेड़ें! हम अगर उन्हें खाएंगे तो दांतों में ऊन ही ऊन चिपक जाएगा और पेट रहेंगे ख़ाली के ख़ाली। आओ, आगे चलें!"

सो वे आगे चल दिए। चलते गए, चलते गए और तब कुत्ते को मैदान में हंसों का एक झुंड दिखाई दिया।

उसने बिल्ले से कहा, "भाई, ज़रा भागकर जाओ और देखकर आओ कि मैदान में वे कौन-से जानवर हैं!"

बिल्ला गया और उसने झटपट आकर बताया, "हंस हैं।"

"भाड़ में जाएं कंबख़्त हंस। उन्हें खाने से हमारे दांतों में पंख ही पंख चिपक जाएंगे और पेट रहेंगे ख़ाली के ख़ाली।"

सो वे आगे चल दिए। वे चलते गए, चलते गए और तब कुत्ते को चरागाह में एक घोड़ा दिखाई दिया। उसने बिल्ले से कहा, "भाई बिल्ले, ज़रा भागकर जाओ और देखकर आओ की चरागाह में वह कौन-सा जानवर चर रहा है।"

बिल्ला गया और उसने झटपट आकर बताया, "घोड़ा है।"

"तो हम इसे मारेंगे, पेट भरकर खाएंगे और कुछ बचा भी पाएंगे।"

चुनांचे कुत्ते ने ज़मीन पर अपने पंजे रगड़ने और दांत तेज़ करने शुरू किए ताकि वह आग-बबूला हो जाए।

तब उसने बिल्ले से कहा, "भाई बिल्ले, ज़रा देखो तो कि मेरी पूंछ ज़ोर से हिल रही है?"

"नहीं," बिल्ले ने जवाब दिया। "ज़ोर से नहीं हिल रही।"

वह फिर से ज़मीन पर अपने पंजे रगड़ने लगा ताकि सचमुच ही बहुत गुस्से में आ जाए।

उसने फिर बिल्ले से कहा, "भाई बिल्ले, अब मेरी दुम ज़ोर से हिल रही है न? कहना कि ज़ोर से हिल रही है!"

बिल्ले ने देखा और कहा, "हां, बहुत ही ज़रा-सी।"

"अब देखते जाना, हम जल्द ही घोड़े को धर दबाएंगे।" कुत्ते ने कहा। और वह फिर से ज़मीन पर पंजे रगड़ने लगा।

"भाई बिल्ले, ज़रा देखो तो मेरी आंखें लाल-लाल हो गई हैं?" उसने कुछ देर बाद कहा।

"नहीं तो," बिल्ले ने जबाव दिया।

"यह झूठ है! तुम्हें यही कहना चाहिए कि अंगारा हो गई हैं।"

"ख़ैर, अगर तुम ऐसा ही चाहते हो तो मैं कह सकता हूं कि हो गई हैं," बिल्ले ने कहा।

तब कुत्ता लाल-पीला होता हुआ घोड़े पर झपटा। मगर घोड़े ने दुलत्ती चलाई और उसकी लात कुत्ते के सिर पर जाकर लगी। कुत्ता ज़मीन पर गिर गया और उसकी आंखें बाहर निकल आईं। बिल्ला भागकर उसके पास गया और बोला, "आह, भाई कुत्ते, अब तुम्हारी आंखें सचमुच अंगारों जैसी हो गई हैं!" □□□

सभी चित्र : हुताराम अधिकारी

॥ तुम भी बनाओ ॥

अपनी नाटक मंडली

पिछले अंक में हमने तुम्हें न्यौता दिया था अपनी नाटक मंडली बनाने का। और इसके लिए दो आसान पुतलियां बनाने का तरीक़ा भी बताया था।

अभी पिछले हफ़्ते जब हम आलू से बनी पुतलियों से अपने दोस्तों के साथ खेल रहे थे तो हमने देखा कि सारी पुतलियों के चेहरे कुछ थके हुए, मुरझाए से लग रहे थे। उन पर झुर्रियां पड़ी हुई थी। पहले तो समझ ही नहीं आया कि चक्कर क्या है? ये पुतलियां इतनी उदास क्यों हो गई? फिर पता चला कि पुतलियों को कुछ नहीं हुआ था। वो तो आलू ही सूखकर सिकुड़ गए थे। इसलिए पुतलियों के चेहरों पर झुर्रिया पड़ गईं थीं। मतलब यह कि आलू से बने सिर ज़्यादा दिन तक नहीं चल सकते। कुछ और सोचना पड़ेगा।

चलो, इस बार पहले कोई ऐसा सिर बनाएं जो टिकाऊ हो, है न। इसके लिए जो चीज़ें तुम्हें इकट्ठा करनी होंगी वो हैं- एक 5 सें.मी. चौड़ी और लगभग 20 सें.मी. लंबी सफ़ेद काग़ज़ की पट्टी, अख़बारी काग़ज़, कैंची, गोंद या लेई, ऊन, रूई, रंग, ब्रुश, कपड़ों के टुकड़े (अलग-अलग रंग या छींट के)।

सबसे पहले काग़ज़ की लंबी पट्टी को लपेटना है। 20 सें.मी. लंबी पट्टी बनाने के लिए तुम्हें 5 से.मी. चौड़ी 2-3 पट्टियों को चिपकाना पड़ेगा। जब पट्टी लगभग 20 सें.मी. लंबी हो जाए तो उसे एक सिरे से गोल-गोल लपेटना शुरू करो। पर एक बार रुककर यह देख लो कि जो बीच में सुराख़ बनता है उसमें तुम्हारी तर्जनी (अंगूठे के पास वाली उंगली) घुसकर आसानी से हिलडुल सकती है या नहीं। अगर नहीं, तो इतनी गुंजाइश छोड़कर फिर से लपेटना शुरू करो। पूरी पट्टी को लपेटकर आख़िरी सिरे को गोंद से चिपका दो। तुम्हारे पास 5 सें.मी. लंबा एक बेलन होगा।

इस बेलन से हम पुतली के सिर का आधार और गले का काम लेंगे। गला तो बना-बनाया है। बेलन के ऊपरी हिस्से को आधार मानकर उस पर सिर गढ़ना होगा। इसके लिए अख़बारी काग़ज़ के एक छोटे (आधे) पन्ने का लगभग 1/8 वां भाग फाड़ लो और उसे गुड़ी-मुड़ी करके, मसलकर अंडे के आकार की एक गेंद-सी बना लो। अब बेलन के ऊपरी सिरे पर गोंद लगाकर इसे उस पर चिपका दो। ऐसे कि चौड़ा वाला भाग ऊपर की ओर हो। यह रहा सिर का ढांचा। नाक और कान बाकी चेहरे से काफ़ी ऊपर उठे रहते हैं। इसलिए अख़बारी काग़ज़ से ही गुड़ी-मुड़ी करके दो लंबी गोल पाइप-जैसी आकृति और एक छोटे समोसे-जैसी आकृति बना लो। लंबे पाइपों को कान की जगह पर गोलाई देकर चिपका दो। और समोसे को नाक की जगह चिपकाओ।

अब अख़बारी काग़ज़ की कई सारी पतली लंबी पट्टियां फाड़ लो। ध्यान रहे पट्टियां काटनी नहीं हैं, फाड़नी ही हैं ताकि दोनों किनारों पर रेशे निकले रहें। अब एक पट्टी लो, इसमें एक ओर गोंद लगाकर इसे सिर के ढांचे पर लपेटते हुए चिपकाओ। (**चित्र-1**)। जब यह चिपक जाए तो इसी

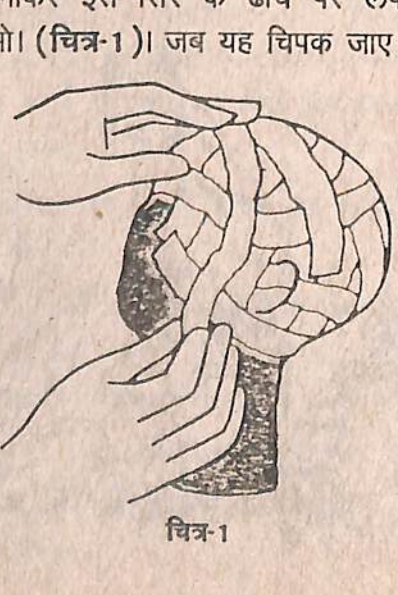

चित्र-1

तरह दूसरी पट्टी चिपकाओ। फिर तीसरी, चौथी........

यहां यह ध्यान रखना कि एक पट्टी आड़ी लगाई हो तो उसके ऊपर खड़ी पट्टी लगाना है और उसके ऊपर फिर आड़ी। इस तरह से जब सिर पर पट्टियों की 4-5 परतें लग जाएं **(चित्र-2)** तो उंगलियों से दबा-दबाकर उसमें नाक-नक्श उभारने होंगे।

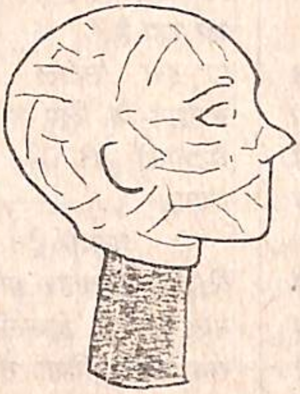

चित्र-2

चित्र-3 में देखो कि एक साधारण अंडाकार चेहरे में आंख-नाक- मुंह आदि की जगह कहां होती है। पूरे सिर में से निचले हिस्से को उभारकर ठुड्डी बना लो। फिर सिर के दोनों बाजुओं में बने कानों को धीरे-धीरे ज़रूरत के हिसाब से उभारो। आंख की जगह पर उंगलियां धंसाकर दो छोटे-छोटे छिछले गड्ढे बना लो। कान की ही तरह अंगूठे और उंगलियों की मदद से नाक को उभारो। नाक में झाडू की सींक या पेंसिल की नोक से छेद बना लो। होंठों को भी हल्का-सा उभार दो।

इस चेहरे पर रंगों से भौहें, आंखें, होंठ, आदि

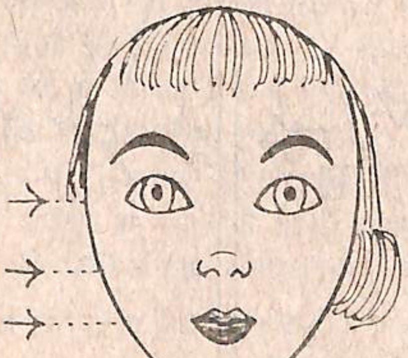

चित्र-3

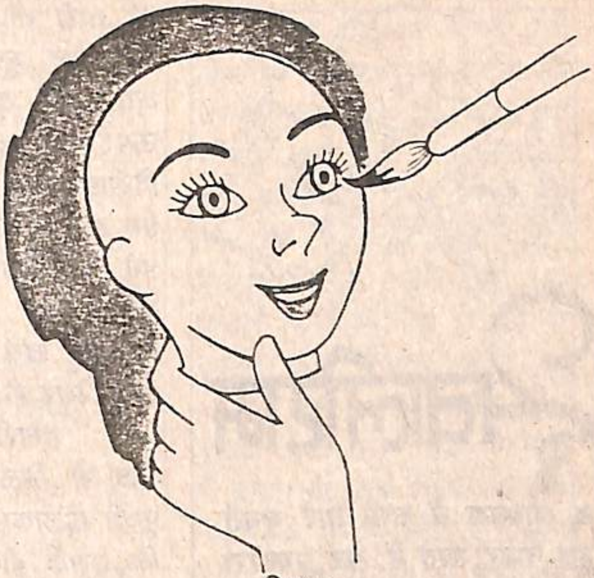

चित्र-4

बना लो। **(चित्र–4)** अगर कोई बूढ़ा आदमी बनाना चाहो तो रूई से उसकी मूछें और भौंहें बना सकते हो। और अब बालों के लिए ऊन चिपकाना है। पहले खोपड़ी पर गोंद का एक लेप लगा लो और फिर सफ़ाई से ऊन के टुकड़े चिपकाओ। बालों का स्टाइल अपनी मर्ज़ी से तय करो और फिर जब बाल में लगी गोंद सूख जाए तो उन्हें बराबर छांट दो।

इस पुतली को तुम पिछली बार बनाए हुए कपड़े पहनाकर भी नचा सकते हो। या फिर उसके लिए नए कपड़े ऐसे बनाओ। **चित्र 5/6** देखो।

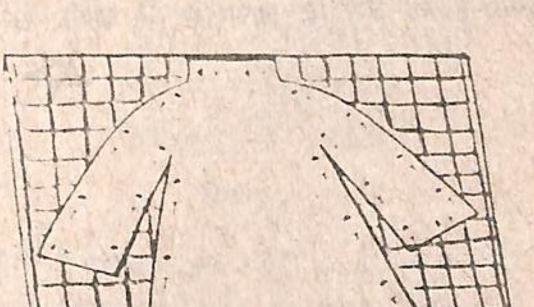

चित्र-5

कपड़े को दोहरा करके उस पर, जैसा दिखाया है वैसे ही पाजामा या लहंगा और जाकिट की आकृति बनाकर काट लो। किसी भी कपड़े (लहंगा, जाकिट आदि) के दोनों टुकड़ों को बाजुओं से सिल लो। फिर

(शेष पृष्ठ 13 पर)

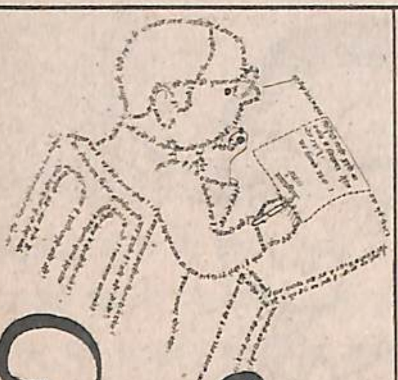

सवालीराम

■ आकाश में सभी तारे घूमते हुए नज़र आते हैं, पर ध्रुवतारा अपनी जगह पर स्थिर क्यों दिखाई देता है?

□ सुरेशचंद्र बघेल, राजापुर, हरीगढ़, उ.प्र.

□ तुमने मेले में या वैसे ही गोल-गोल घूमने वाला झूला ज़रूर देखा होगा। शायद उसमें बैठे-भी होगे। यह झूला एक स्थिर खड़े खंभे के चारों ओर घूमता है। कई बार इस खंभे के ऊपर झंडा लगा रहता है।

घूमते हुए झूले में ऐसा लगता है कि जैसे कि आसपास की सारी चीज़ें हमारे साथ ही गोल-गोल घूम रही हैं? अब अगर हम खंभे से लिपटकर ऊपर देखेंगे तो झंडा हमें स्थिर दिखाई देगा। दूसरी और जब हम झूले में बैठे हुए होते हैं तो हमें आसपास की चीज़ें गोल घूमती हुई नज़र आने के बावजूद खंभे के ऊपर लगा झंडा स्थिर ही दिखाई देता है।

हमारी पृथ्वी भी इस चक्र से मिलती-जुलती ही है। पृथ्वी गोलाकार है। कल्पना करो कि उसके बीच से एक तिरछा अक्ष गुज़रता है। (चित्र देखो)। इस काल्पनिक अक्ष के चारों ओर हमारी पृथ्वी घूमती है। अब अगर पृथ्वी एक झूला हो, तो उसका अक्ष झूले का खंभा होगा और हम सारे लोग उस झूले में बैठे हुए लोग।

तो ठीक जैसे झूले के खंभे के ऊपरी सिरे पर झंडा लगा है वैसे ही अक्ष के सिरे के ऊपर ध्रुवतारा है।

झूले में घूमते हुए हमें बाक़ी सभी चीज़ें घूमती हुई नज़र आती हैं। बस, सिर्फ झंडा स्थिर दिखाई देता है। वैसे ही जब पृथ्वी घूमती है तो बाक़ी सभी तारे आकाश में घूमते हुए नज़र आते हैं पर ध्रुवतारा स्थिर दिखाई देता है।

■ जब हम रात में कहीं सफर करते हैं तो ऐसा क्यों लगता है कि चांद भी हमारे साथ चलता जा रहा है?

□ इस सवाल का जवाब समझने के लिए हमें कुछ और घटनाओं को भी याद करना पड़ेगा।

चलती ट्रेन या बस की खिड़की से बाहर झांकने पर हमें मकान, पेड़, बिजली के खंभे... सब उल्टी दिशा में चलते हुए नज़र आते हैं। पहले जो पेड़ हमसे कुछ आगे दिखाई देता है वो कुछ ही क्षणों में हमारे बराबर आ जाता है और फिर अगले ही पल हमसे पीछे छूट जाता है। पर यह तो हम जानते

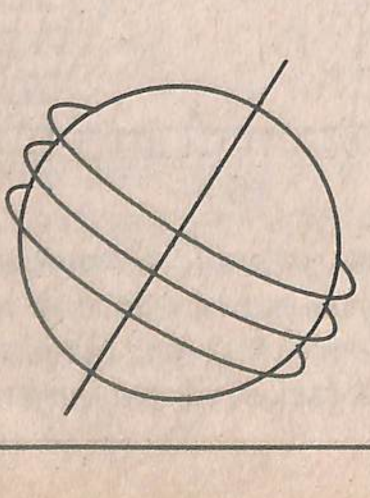

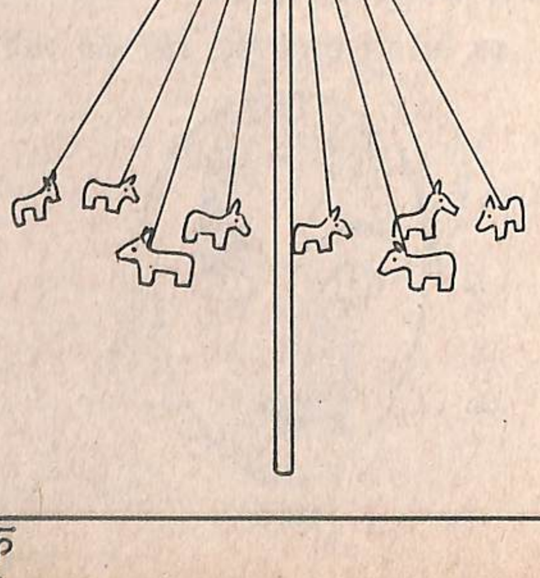

ही हैं कि पेड़, खंभे, मकान, चलते नहीं हैं। असल में तो हम ही चल रहे होते हैं और इन सब चीज़ों के पास से गुज़रते हैं।

ये सारी चीजें हमारी उल्टी दिशा में कितनी तेज़ी से चलती हुई दिखेंगी यह दो बातों पर निर्भर करता है। एक हमारी रफ्तार और दूसरी हमसे इनकी दूरी।

ट्रेन या बस में सफर करते समय उल्टी दिशा में भागती चीज़ों को ध्यान में देखने पर तुम पाओगे कि अलग-अलग दूरी की चीज़ें अलग-अलग रफ्तार से पीछे जाती हुई दिखती हैं। बहुत पास के पेड़ बहुत तेज़ रफ्तार से भागते हैं, कुछ दूर लगभग 100 मीटर पर बने घर उनसे कुछ धीरे और बहुत दूर के एक डेढ़ कि.मी. दूर के पहाड़ तो बहुत धीरे। फिर लगभग 360,000 कि.मी. दूर का चांद तो इतने धीरे-धीरे चलेगा कि पीछे जाता हुआ नज़र ही नहीं आएगा।

इसे एक प्रयोग की मदद से समझते हैं। खुले में खड़े होकर अपनी एक आंख बंद कर लो। अब अपनी कोई भी एक उंगली अपनी खुली आंख के सामने खड़ी करो। उंगली को हिलाकर किसी ऐसी स्थिति/ जगह पर ले जाओ कि उससे कोई दूर का पेड़ (या खंभा) ढक जाए। उंगली को इसी जगह पर स्थिर रखते हुए सिर को धीरे-धीरे दाहिने और घुमाओ। क्या हुआ? पेड़ भी तुम्हारे सिर के साथ उंगली के दाहिने ओर निकल आया न। अगर सिर को बाईं और घुमाओगे तो उस तरफ भी ऐसा ही होगा। यह सब प्रकाश के एक नियम के कारण होता है। और इसी नियम के कारण चांद भी सफर के दौरान हमारे साथ-साथ चलता दिखाई देता है। ☐☐☐

(पृष्ठ 11 का शेष)

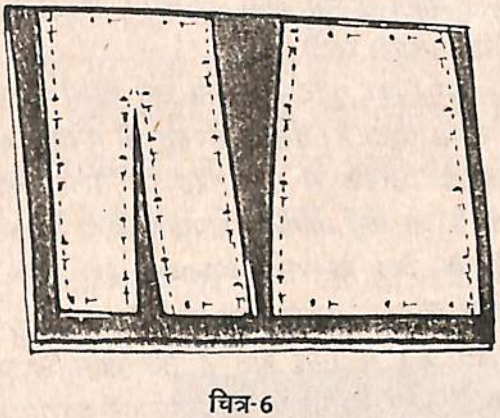

चित्र-6

चित्र-7

पाजामे या लहंगे में रूई या कपड़े की चिंदियां भरकर उसे फुला लो। नीचे से पाजामे में दो छोटे गोल कपड़े या लहंगे में एक बड़ा गोल कपड़ा सिल दो ताकि रूई या चिंदियां नीचे न गिरें। जाक़िट की पीठ में एक लंबा कट लगा लो जिसमें से तुम्हारा हाथ अंदर-बाहर आ-जा सके। पाजामे के ऊपरी सिरे पर जाकिट को सिल दो ताकि पाजामा नीचे दबा रहे और जाकिट ऊपर लहराता रहे।

अब जाकिट के पीछे बनाए कट में अपना हाथ घुसाओ। इसके गले वाले हिस्से से तर्जनी बाहर निकालो। अंगूठा और बीच वाली उंगली दोनों आस्तीनों में घुसाओ। अब तर्जनी पर पुतली का सिर पहन लो। पुतली को नचाने का अभ्यास करो। कैसे नाचती है?

तुम चाहो तो इस पुतली की हथेलियां भी बना सकते हो। आइसक्रीम खाने के दो चम्मच जुगाड़ो। इनके हैंडल वाले हिस्से में गोंद लगाकर आस्तीनों में घुसाकर चिपका दो ताकि चौड़े वाले हिस्से बाहर रहें। या फिर गत्ते से दो छोटी-छोटी हथेली जैसी आकृतियां काटकर चिपकाओ। (चित्र-7) हाथ भी तैयार। ☐☐☐

काजू

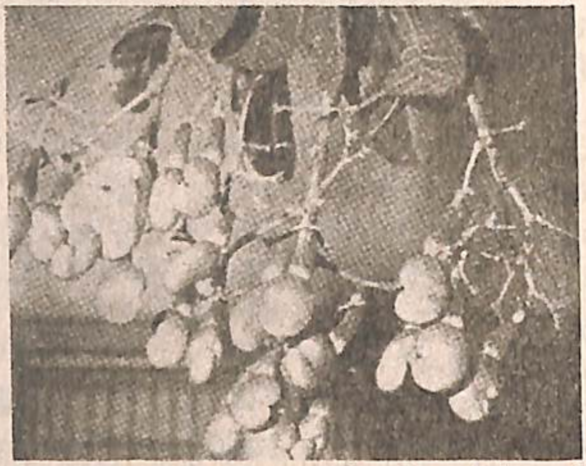

लगभग 400 वर्ष पहले पुर्तगालियों द्वारा हमारे देश में लाया गया था काजू का पेड़। ब्राज़ील से लाकर इसे मालाबार तट पर लगाया गया। अब यह हिंदुस्तान के मुख्य पेड़ों में गिना जाता है। मुख्य रूप से इसकी खेती भारत में समुद्री किनारों पर होती है। वैसे यह पेड़ किसी भी तरह की ज़मीन पर लगाया जा सकता है। लेकिन बालू मिली मिट्टी इसके लिए ज़्यादा उपयुक्त होती है। अधिक ठंड या अधिक गर्मी में यह पेड़ ठीक से पनप नहीं पाता। इसके लिए मध्यम मौसम होना ज़रूरी है। पहाड़ों पर 2000 फुट की ऊंचाई तक यह पेड़ लग सकता है। काजू का पेड़ बीज से लगाया जा सकता है।

यह मध्यम क़द का, हमेशा हरा रहने वाला पेड़ है। पूर्वी समुद्री तट पर लगने वाले काजू के पेड़ की डालों का फैलाव इतना ज़्यादा होता है कि कभी-कभी डालें ज़मीन को छूने लगती हैं। ज़मीन को छूती हुई इस तरह की डाल जड़ पकड़कर ख़ुद पेड़ बन जाती है। लेकिन पश्चिमी तट पर लगने वाले पेड़ लंबाई में बढ़ते हैं। काजू के पेड़ का तना छोटा होता है। पत्ते गोलाई लिए हुए सख़्त होते हैं। इनका डंठल छोटा होता है। छोटी-छोटी टहनियों के सिरों पर पीले रंग के फूल गुच्छों में खिलते हैं। फूलों पर गुलाबी धारियां होती हैं। पेड़ में फूल दिसंबर से आना शुरू हो जाते हैं और मार्च तक रहते हैं।

मार्च में इसमें फल आना शुरू होते हैं सभी फल एक साथ न पककर बारी-बारी पकते हैं, मार्च से लगभग मई तक। कच्चा फल हरा या हल्का गुलाबी-सा और पकने पर भूरे रंग का होता है। फल का ऊपरी भाग जो टहनी से जुड़ा होता है गूदेदार सेब जैसा होता है। उसके नीचे गुर्दे जैसी आकृति वाला हिस्सा होता है। इसमें से काजू की गिरियां निकाली जाती हैं।

ऊपर का गूदेदार हिस्सा जब ताज़ा होता है तब खाया जाता है। इसका शरबत भी बनाया जाता है। इसके छिलके से एक तरह का तेल निकाला जाता है जो कई कामों में उपयोग किया जाता है। मिट्टी के तेल के साथ मिलाकर इस तेल को छिड़का जाए तो मच्छर भाग जाते हैं। काजू के पेड़ के पत्ते जब मुलायम होते हैं तब खाने के काम आते हैं। पत्तों का मरहम जले हुए पर आराम देता है। काजू के पेड़ से हल्के पीले रंग का गोंद बनाया जाता है, जो किताब की जिल्द बनाने, कीड़ों को मारने, स्याही बनाने और लकड़ी के खंभों को दीमक से बचाने के काम आता है। इस पेड़ की छाल का काढ़ा दस्त रोग में काम आता है।

इस पेड़ की लकड़ी बक्से, नाव, कोयला आदि बनाने के काम आती है। और इस सबके अलावा काजू तो खाया ही जाता है। कई तरह के विटामिन और प्रोटीन से भरपूर काजू स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। अंग्रेज़ी में काजू को **केशू** (Cashew) कहते हैं।

□□□

क्षिप्रा : प्रदूषण की मारी एक नदी

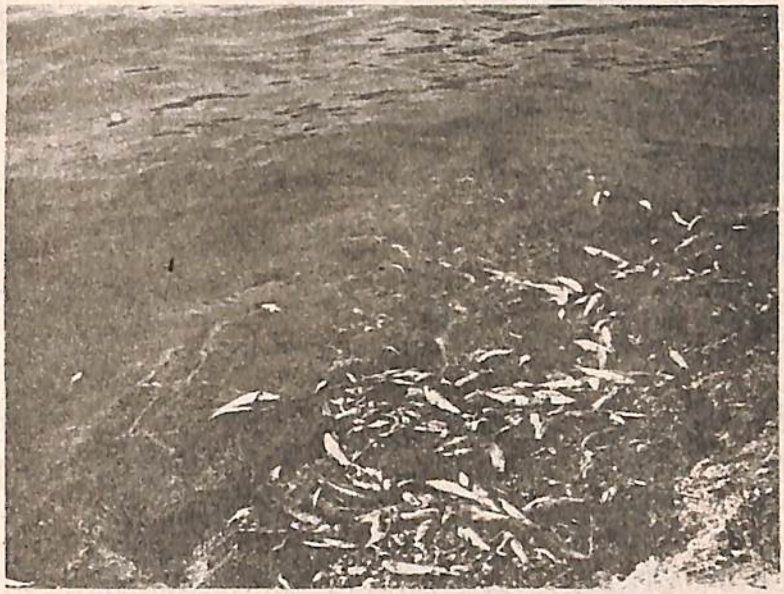

मरी हुई मछलियां

आज से कोई दो साल पहले की बात है। जून का महीना था। उज्जैन और आसपास के इलाक़े में मौसम की पहली बरसात हुई थी। क्षिप्रा नदी के गौ घाट पर लोगों ने पाया कि बड़ी संख्या में मछलियां मरी हुई पड़ी हैं। इन मछलियों को लोग खाने और बेचने के लिए बीन-बीनकर ले जा रहे थे। उधर नदी के पूरे पाट (चौड़ाई) में लगभग आधा किलोमीटर तक गुलाबी रंग का झाग दस-पंद्रह फुट की ऊंचाई तक फैला हुआ था। मरी हुई मछलियों और किनारे की मिट्टी-पत्थरों पर लाल रंग की परत जम चुकी थी।

सबके चेहरे पर एक जिज्ञासा, एक सवाल था कि आख़िर माजरा क्या है? जानकार लोगों का कहना था कि मछलियों की मौत पानी में घुली ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाने के कारण

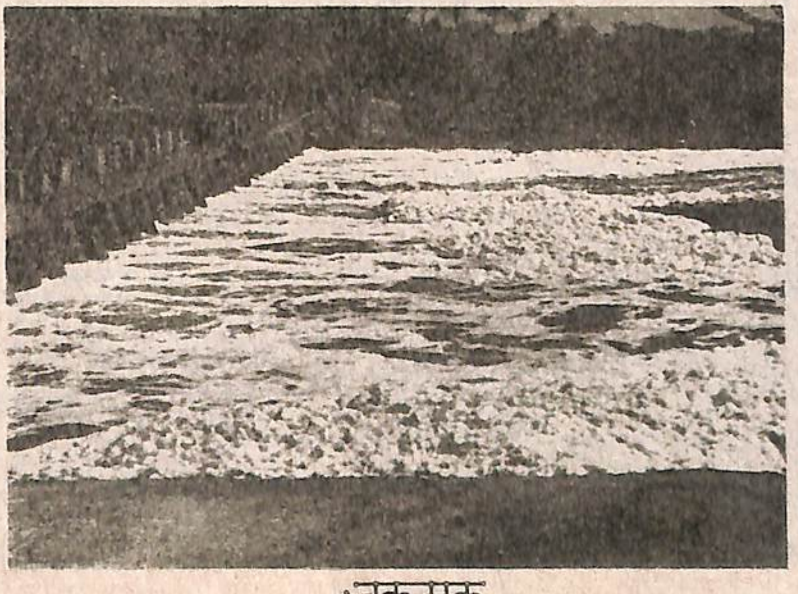

नदी में गुलाबी झाग

हुई है। घटना के तीन दिन बाद एक प्रयोग से पता चला कि पानी में घुली ऑक्सीजन की मात्रा प्रति लिटर 3.2 मिलीग्राम भर थी, जो मछलियों के जीवित रहने के लिये पर्याप्त नहीं थी।

ऑक्सीजन की मात्रा कम क्यों हुई? प्रशासन का कहना था कि बरसात होने से काफ़ी मात्रा में मल, सड़ा-गला कचरा, मिट्टी वग़ैरह बहकर नदी में पहुंच गए, इससे पानी में घुली ऑक्सीजन की मात्रा कम हो गई। और गुलाबी झाग औद्योगिक प्रदूषण के कारण बना। नदी के किनारे मिट्टी पर जमी लाल रंग की परत की वैज्ञानिक जांच में यह पाया गया कि उस दिन बाढ़ के पानी में कैडमियम, कोबाल्ट, सीसा, पारा जैसी घातक धातुओं के अंश मौजूद थे।

यह घटना क्षिप्रा के किनारे बसे लोगों के लिए एक खुली चेतावनी थी।

क्षिप्रा एक मैदानी नदी है। इंदौर से दक्षिण-पूर्व में कोई पंद्रह किलोमीटर दूर विंध्याचल पर्वतमाला से निकलकर लगभग दो सौ किलोमीटर बहकर चंबल में मिलती है।

क्षिप्रा के किनारे अनेक गांव, शहर बसे हुए हैं। इनमें साढ़े चार लाख की आबादी वाला शहर उज्जैन भी है। क्षिप्रा में जयजयवंती, आशामती, कंकावती, गंभीर तथा खान नदियों के अलावा अनेक नाले आकर मिलते हैं।

पुराणों में क्षिप्रा को ज्वर उतारने वाली, पाप धोने वाली तथा अमृत के समान पानी वाली बताया गया है। लेकिन किसे मालूम था कि क्षिप्रा इस क़दर प्रदूषित हो जाएगी कि इसका पानी पीना तो दूर बल्कि, इसके किनारे पर खड़े रहना भी दूभर हो जाएगा।

अब तो अपने किनारों पर बसे शहरों और गांवों को जीवन देने वाली क्षिप्रा के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लगने लगा है।

वास्तव में किसी नदी में केवल पानी ही नहीं बहता। नदी तो एक तंत्र (सिस्टम) है। इसमें कई

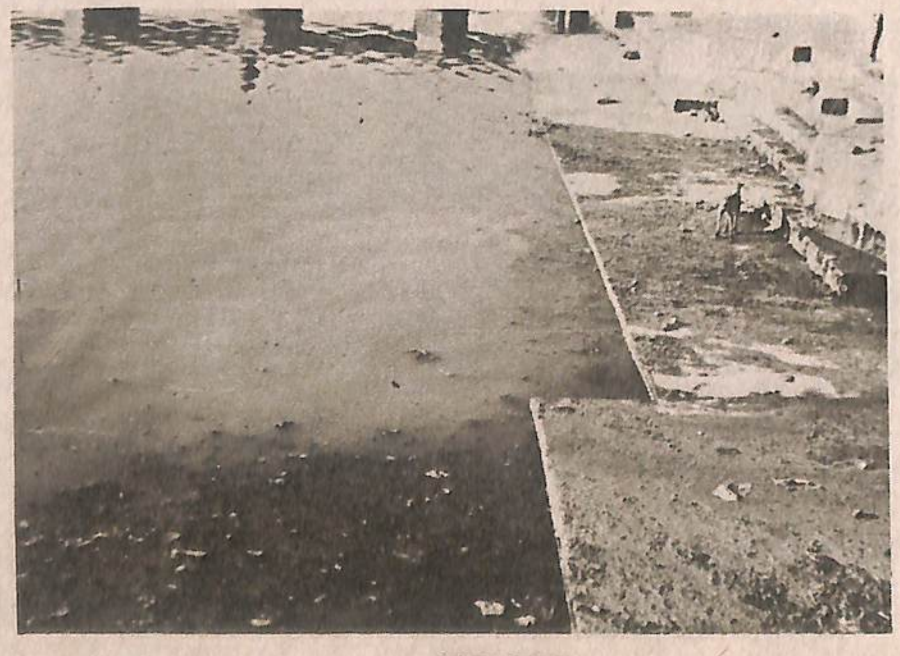

रामघाट

क्षिप्रा के जलग्रहण क्षेत्र में गिरने का इंतज़ार करता एक पेड़। उसके आसपास की मिट्टी बारिश के पानी में बह गई है। हो सकता है अगली बारिश में पेड़ ही बह जाए।

प्रकार की वनस्पति, मछलियां तथा अन्य जीव-जंतु पाए जाते हैं। लेकिन क्षिप्रा का यह सिस्टम अब फ़ेल हो चुका है। कहते हैं आज से बीस साल पहले तक क्षिप्रा में ख़ूब पानी रहता था और वह हर मौसम में बहती भी रहती थी। रामघाट पर मगर और सिद्धघाट पर बड़े-बड़े कछुए पाए जाते थे। लेकिन अब तो क्षिप्रा में पानी ही नहीं है, तो मगर और कछुओं की तो दूर की बात है।

यह देखा गया है कि थोड़ी-सी भी बरसात होती है तो क्षिप्रा में बहुत जल्दी व तेज़ी से बाढ़ आ जाती है। इसके अलावा बाक़ी दिनों में जलस्तर कम रहता है। इन दोनों ही बातों का कारण है क्षिप्रा के जलग्रहण क्षेत्र में वनस्पति का ख़त्म होना। वनस्पति की अनेक विशेषताओं में से एक यह भी है कि वह बरसात के पानी को तेज़ी से बहने नहीं देती। क्षिप्रा के जलग्रहण क्षेत्र की वनस्पति बरबाद हो चुकी है।

लेकिन ऐसा क्यों हुआ या हो रहा है? क्यों सूख रही है क्षिप्रा? कौन कर रहा है क्षिप्रा को प्रदूषित? आमतौर पर तो आज हमारे देश की हर नदी का लगभग यही हाल है। उनमें दिनों-दिन प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। क्षिप्रा के लिए मुख्य रूप से अन्य बातों के अलावा शहर तथा शहर के उद्योगों से निकलने वाला ज़हरीला कचरा ज़िम्मेदार है। क्षिप्रा में इंदौर, तथा उज्जैन शहर का मल-जल तो मिलता ही है, इसके अलावा इंदौर, उज्जैन तथा देवास में स्थित औद्योगिक इकाईयों से निकलने वाले ज़हरीले रसायन भी मिलते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि इंदौर के कुछ उद्योग साल भर तक अपने कारखानों में प्रदूषित पानी तथा बेकार रसायन आदि एकत्रित करते हैं और पहली बारिश में वहां की खान नदी में बहा देते हैं। खान नदी यह सारा प्रदूषण लेकर क्षिप्रा में मिल जाती है।

और जैसा कि होता है, जब क्षिप्रा बुरी तरह प्रदूषित हो चुकी है तब शासन ने क्षिप्रा.के शुद्धिकरण की योजना बनाई है। मगर यह योजना भी फ़ाइलों से आगे नहीं बढ़ पाई है। इस योजना के अंतर्गत क्षिप्रा नदी के किनारे के घाटों का पुनरुद्धार, जलकुंभी समाप्त करना, नदी को गहरा करना आदि शामिल है। लेकिन होगा क्या यह भविष्य ही बताएगा।

फ़िलहाल क्षिप्रा का क्या हाल है, यह आगे दिए चित्रों से समझ सकते हो। और शायद तुम्हें इनमें से क्षिप्रा की यह आवाज़ भी आती सुनाई पड़े-

रोको रोको
उन सबको टोको
जो काटते हैं मेरे
किनारे की मिट्टी को!
जो मिलाते हैं मुझमें
कारखानों का ज़हरीला रसायन!
जो मिलाते हैं शहर का
मल-जल चुपचाप!
अगर तुमने अब भी मेरी सुध न ली
तो मैं हो जाऊंगी खान की तरह
वीरान
नहीं कर पाओगे
मेरे जल से आचमन और स्नान!
नहीं बुझा पाओगे अपनी प्यास।
मैं बदल जाऊंगी गंदे नाले में
मेरी सुंदरता और पवित्रता को
मात्र इतिहास के
पन्नों पर पढ़ पाओगे!

(उज्जैन से के.आर. शर्मा द्वारा भेजी सामग्री पर आधारित। कविता, एकलव्य, उज्जैन द्वारा प्रकाशित 'क्षिप्रा की आवाज़' से। लेख से संबंधित सभी छायाचित्र तथा पारदर्शियों के छायाकार के.आर. शर्मा।)

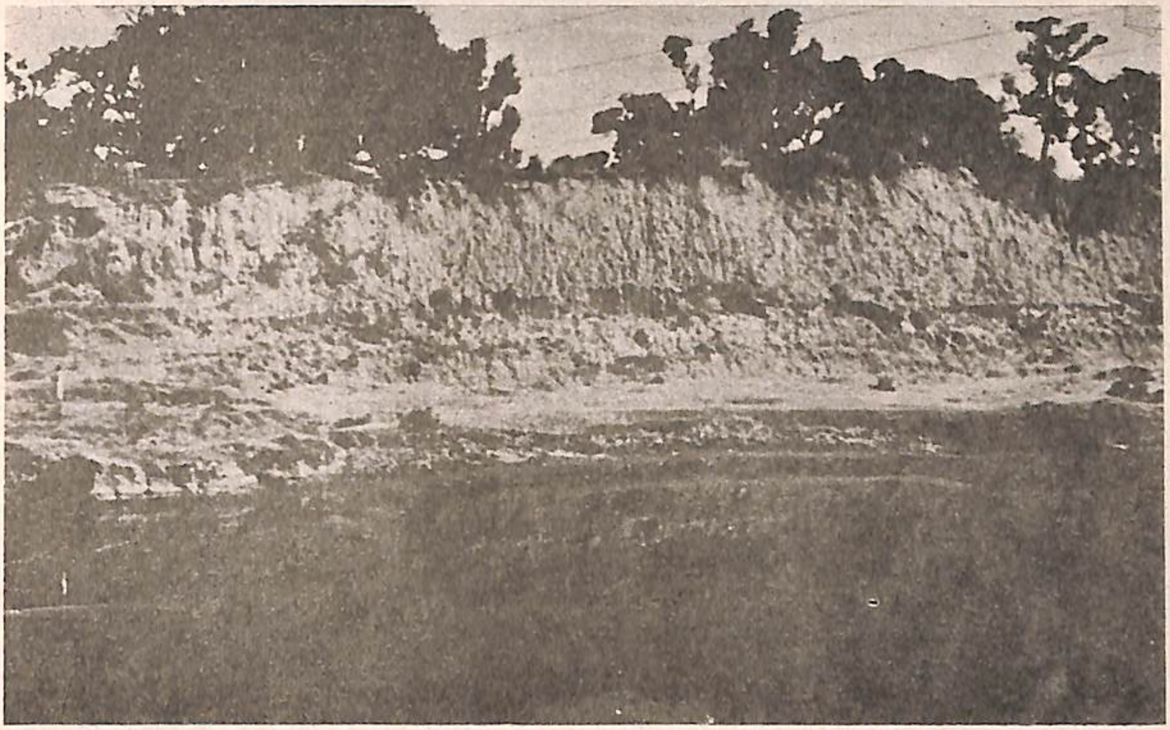

बदहाल किनारे : क्षिप्रा के किनारे सैकड़ों ईंट भट्टे हैं, जो हर साल लाखों की तादाद में ईंट बनाने के लिये मिट्टी खोदते हैं। नतीजा यह कि किनारे कटते जा रहे हैं।

किसी समय लबालब बहने वाली क्षिप्रा का यह हाल है महिदपुर में।

निश्चित रूप से रंग, कपड़ों को एक नई छटा देते हैं। लेकिन रंग ख़तरनाक भी होते हैं। क्षिप्रा में कपड़े रंगे जाते हैं और रंगों के ख़तरनाक रसायन पानी में मिलते रहते हैं।

चक्रतीर्थ घाट पर शव का दाह संस्कार। अपने किनारों पर शवों का दाह संस्कार करते-करते क्षिप्रा भी एक शव की तरह हो गई है।

बासे फूल और पूजन सामग्री सड़कर पानी को प्रदूषित करते हैं, पानी से बदबू आने लगती है। ख़ुद प्रयोग करके देख सकते हो। एक गिलास पानी में एक-दो फूल डालकर चार-पांच दिन के लिए रख दो, उसमें से बदबू उठने लगेगी।

यह उज्जैन के किसी नाले के किनारे या कूड़ाघर का चित्र नहीं है, बल्कि क्षिप्रा का किनारा है।

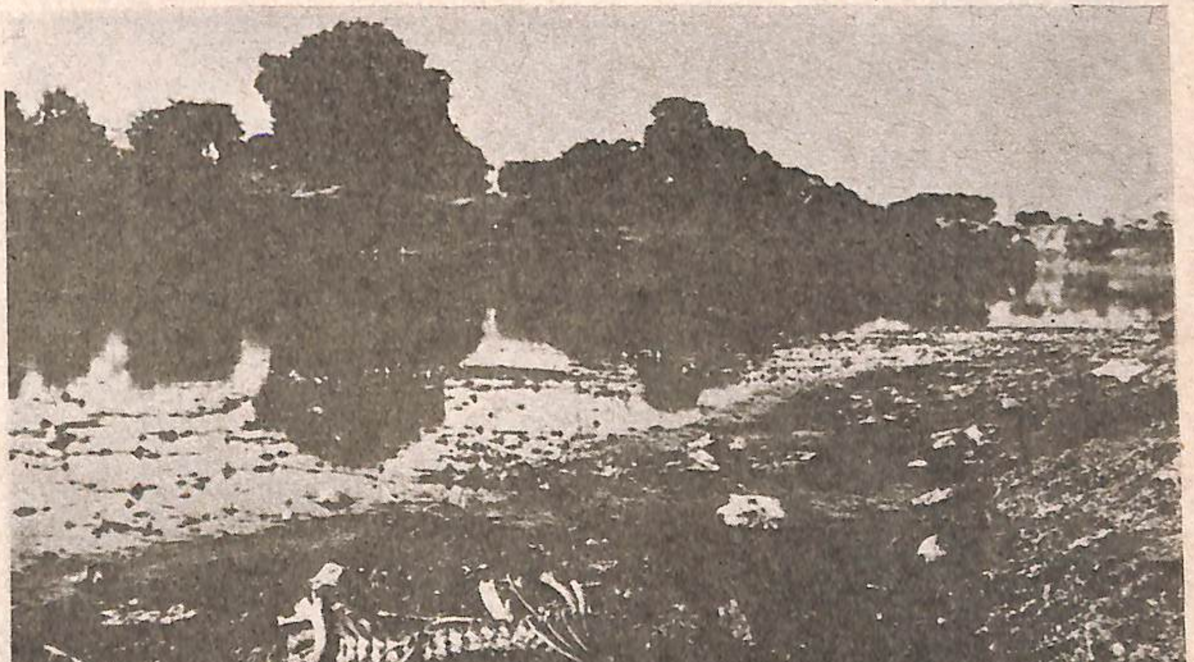

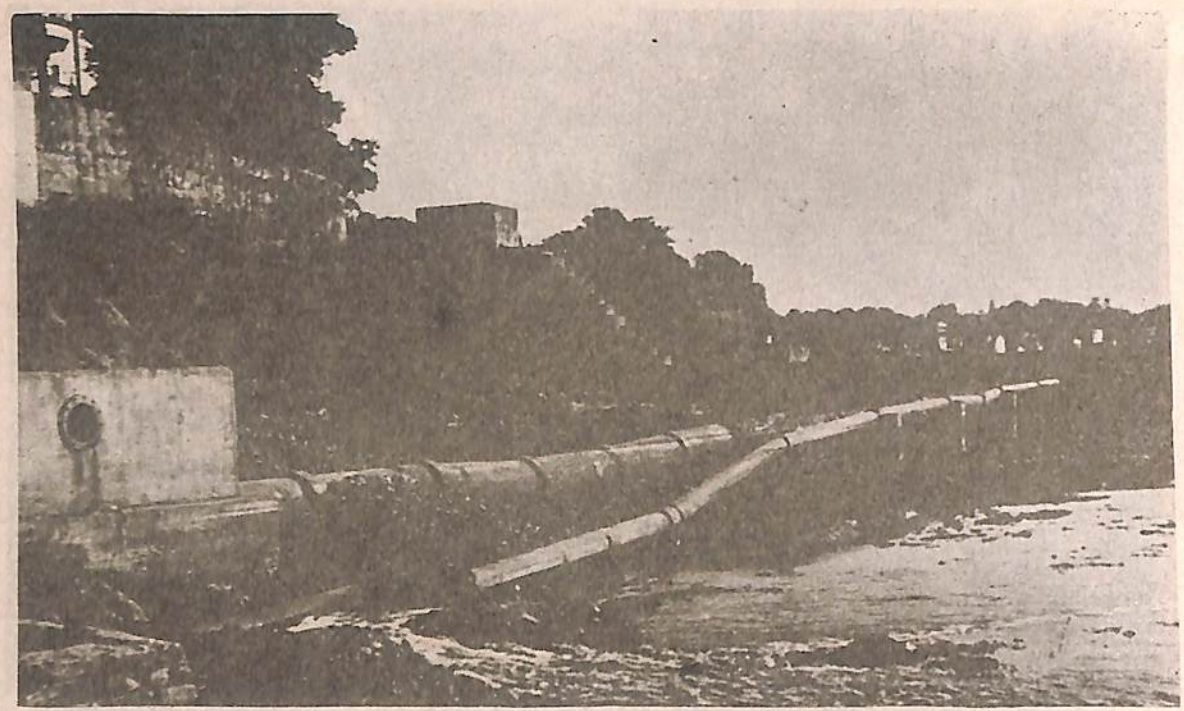

उज्जैन शहर के जल-मल को नदी के दूसरे छोर पर बने सीवेज फार्म तक पहुंचाने की व्यवस्था की गई थी। लेकिन उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं। नतीजा यह कि शहर का सारा जल मल नदी में मिल जाता है।

क्षिप्रा में उसकी सहायक नदियों के अलावा तमाम नाले भी मिलते हैं। महिदपुर के पास क्षिप्रा में मिलता एक नाला।

क्षिप्रा के किनारे धोबीघाट।

गंगा (बस के शीशे पर लिखा है) की धुलाई क्षिप्रा के रामघाट पर। बसों, साइकिलों आदि का भी स्नान होता है। स्नान में वे छोड़ जाते हैं ग्रीस और तेल, जो नदी का प्रदूषण और बढ़ाते हैं।

इंदौर की खान नदी अपने साथ औद्योगिक प्रदूषण बहाकर लाती है और क्षिप्रा में मिलती है। ऐसी प्रदूषित नदी में भैसों का स्नान।

इनके लिए खान नदी का पानी ही नहाने-धोने की 'खान' है, अब चाहे उससे बीमारियों हों या कुछ और!

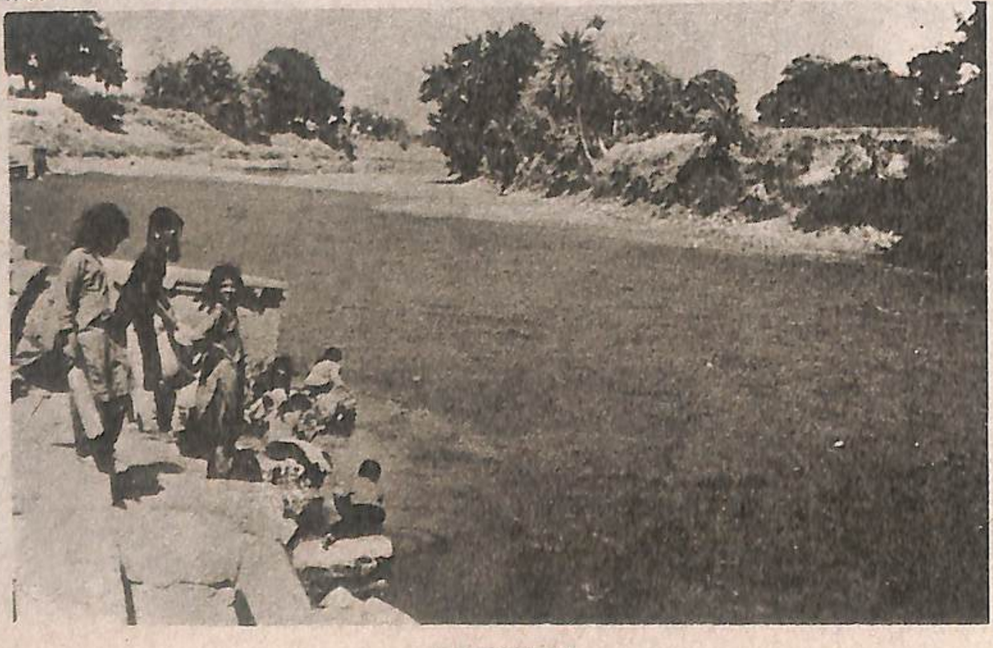

बंटवारा

भालू, भेड़िया और लोमड़ी एक दिन जंगल में मिले। उन्होंने एक-दूसरे के आगे यह रोना रोया कि अक़्सर और बहुत अर्से तक उन्हें भूखे ही घूमना पड़ता है और उनके पेट में चूहे कूदते रहते हैं। वे दुखड़ा रो चुके तो उन्होंने आपस में यह तय किया कि अब जो कुछ भी हासिल करेंगे उसे भाई-बंदी के नाते आपस में बांट लिया करेंगे। इस तरह वे भाई-बहन बन गए, उन्होंने एक-दूसरे के प्रति वफ़ादारी की क़समें खाईं और इकट्ठे शिकार की खोज में चल दिए।

वे चले जा रहे थे शिकार खोजते हुए।

उन्हें एक घायल हिरन मिल गया। उन्होंने झटपट उसकी गर्दन मरोड़ी, उसे खींचकर छाया में घास पर ले गए और लगे उसका बंटवारा करने।

भालू ने भेड़िए से कहा, "लो, तुम इसका बंटवारा करो।"

भेड़िए का भूख के मारे बुरा हाल था और उसके दांत बज रहे थे।

भेड़िए ने ऐसे बंटवारा किया, "भालू जी, आप हमारे सिरताज और श्रद्धेय हैं, इसलिए सिर हुआ आपका, धड़ मेरा और टांगें लोमड़ी की, क्योंकि उसे भागना बहुत पसंद है।"

भेड़िए ने अपनी बात ख़त्म भी न की थी कि भालू ने भेड़िए के सिर पर पंजे से इतने ज़ोर की धौल जमाई कि पहाड़ भी उसकी आवाज़ से गूंज गए। भेड़िया दर्द से चीख़ उठा और ढेर हो गया।

भालू ने अब लोमड़ी से कहा, "हां, तो लोमड़ी, अब तुम बंटवारा करो।"

मक्कार लोमड़ी खड़ी हुई और चापलूसी करती हुई बोली, "सिर आपके लिए क्योंकि आप हमारे सिरताज और राजा हैं, धड़ भी आपके लिए क्योंकि आप सदा पिता-तुल्य हमारी चिंता करते हैं और टांगें भी आप ही के लिए हैं क्योंकि आप सदा हमारी भलाई करते हैं।"

"शाबाश, मेरी लोमड़ी," भालू बोला, "तुम्हें ऐसी समझदारी से और इतना बढ़िया बंटवारा करना किसने सिखाया?"

"श्रीमान जी, आपने भेड़िए का जो हाल किया है, उसे देखने के बाद भी क्या कोई बुद्धू रह सकता है?"

□□□

चित्र: आनंद श्याम

खेल पहेली

यह आकृति सात टुकड़ों (पांच त्रिभुज, एक आयत और एक वर्ग) से मिलकर बनी है। यहां दी गई अन्य आकृतियां भी इन्हीं टुकड़ों से मिलकर बनी हैं। हर आकृति में सातों टुकड़ों का उपयोग हुआ है।

ये सात टुकड़े गत्ते से बनाए जा सकते हैं। एक मोटा गत्ता लो! उस पर एक बड़ा वर्ग बनाओ। वर्ग को 16 बराबर हिस्सों में बांट दो! हर हिस्सा भी एक वर्ग होगा। अब वर्ग पर चित्र में दिखाए अनुसार रेखाएं खींच लो। इन रेखाओं पर से गत्ते को टुकड़ों में काट लो। टुकड़ों पर रंगीन काग़ज़ चिपकाकर सुंदर बना सकते हो। बस इन्हीं टुकड़ों को आपस में मिलाकर रखने पर आकृतियां बनेंगी। तुम भी बना देखो (हल अगले अंक में)।

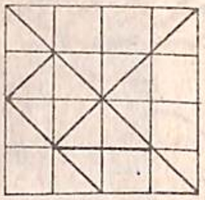

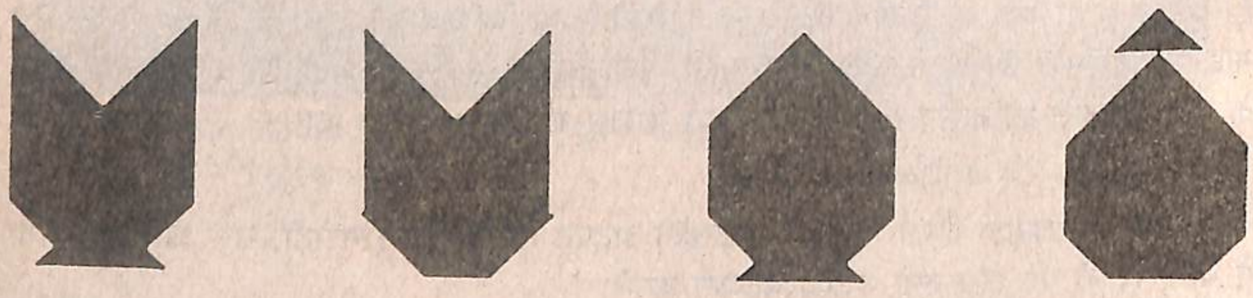

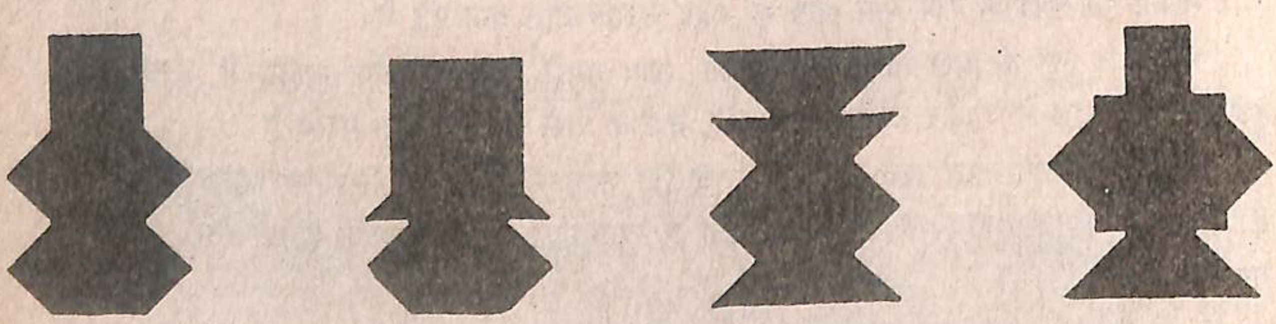

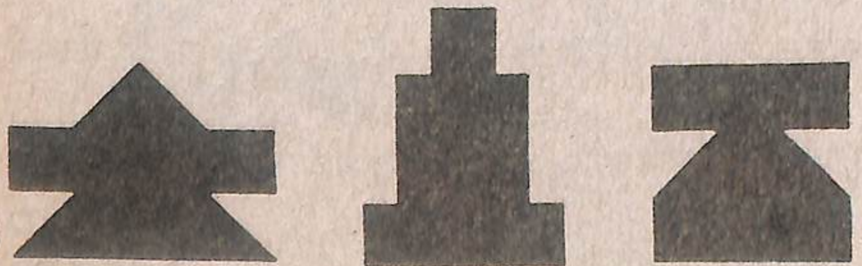

हल अप्रैल, 93 अंक के

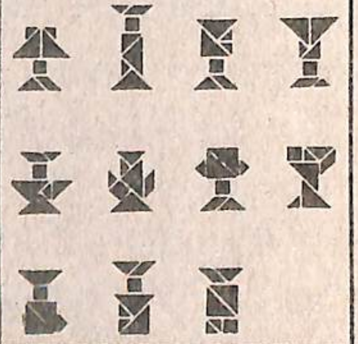

ढेंचू! ढेंचू!!

ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!
मैं ज़ोर ज़ोर से रेंकू!!
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!

शहर गया है धोबी
लाने आलू-गोभी
सब कुछ मैं खा लूंगा
आज मिलेगा जो भी

खेत मेड़ में जा के
मैं ख़ूब दुलत्ती फेंकू!
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!

आज पीठ है ख़ाली
मैं फूलों की डाली
जी भर के लोटूंगा
बंद हुई रखवाली

जी करता दुनिया को
मैं टके सेर में बेंचू
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!

सपनों में खो जाऊं
मैं धोबी बन जाऊं
फिर अपने धोबी को
भूरा गधा बनाऊं
उस पर कपड़े लादे
मैं कान पकड़कर खेंचू!
ढेंचू! ढेंचू! ढेंचू!

❑ हरीश निगम
चित्र : सुशील लांडगे

खेल कागज़ का

घन

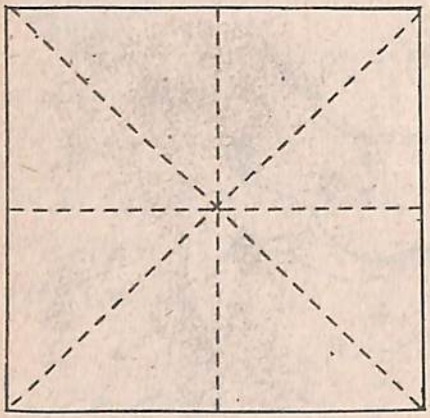

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से एक-एक करके सारे मोड़ बना लो।

2. कागज़ को बीच से दोहरा कर लो।

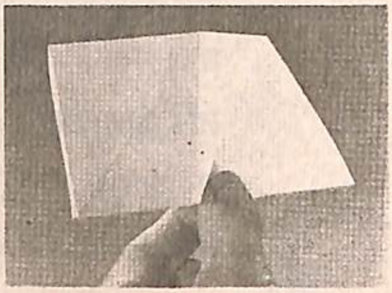

3. चित्र में दिखाए तरीक़े से कागज़ को पकड़ो और दोहरे किए हिस्से में से दाएं हिस्से को खोलो।

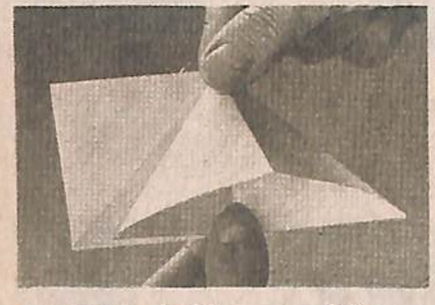

4. कागज़ को नीचे रखकर खोले हुए हिस्से को दबाकर समतल कर लो।

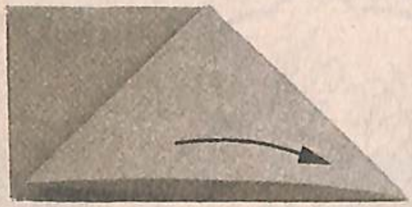

5. ऐसी आकृति मिलेगी। समतल किए हिस्से में बने त्रिभुज के बाएं हिस्से को त्रिभुज के बीच से तीर की दिशा में मोड़ते हुए दाईं ओर लाओ।

6. ऐसी आकृति मिलेगी। अब आकृति के बाएं हिस्से पर भी चित्र **3** से **5** तक की क्रिया दोहराओ।

7. ऐसी आकृति मिलेगी। (यहां से आगे की आकृतियां तुम अलग डिज़ाइन के कागज़ पर देखोगे।) चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ते हुए आकृति की ऊपरी सतह के दोनों सिरों को ऊपर लाओ।

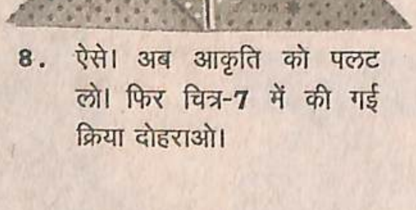

8. ऐसे। अब आकृति को पलट लो। फिर चित्र-**7** में की गई क्रिया दोहराओ।

9. ऐसी आकृति मिलेगी। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से आकृति की ऊपरी सतह के दाएं-बाएं सिरों को इस तरह मोड़ना है कि वे बीच की खड़ी रेखा पर मिल जाएं।

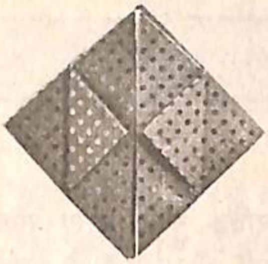

10. इस तरह। अब आकृति को पलट लो और इस तरफ भी चित्र-9 की क्रिया दोहराओ।

11. ऐसी आकृति मिलेगी। इसमें ऊपर की तरफ के ऊपरी सतह के दोनों सिरों को टूटी रेखा पर से मोड़ते हुए नीचे लाओ।

12. अब इन दोनों सिरों को उनके नीचे बाजू में बने बड़े त्रिभुजों की जेब में घुसाना है। बायां सिरा बाएं त्रिभुज में और दायां सिरा दाएं त्रिभुज में।

13. इस तरह। दोनों सिरों को त्रिभुजों में घुसाने के बाद आकृति को पलट लो। फिर दूसरी तरफ की ऊपरी सतह के सिरों को भी चित्र 11 और 12 की क्रिया दोहराते हुए मोड़ लो।

14. ऐसी आकृति मिलेगी। अब आकृति को उठाकर देखो। चित्र में जहां तीर से दिखाया गया है वहां एक छेद दिखाई देगा। इस छेद से मुंह लगाकर हवा भरो। क्या बना?

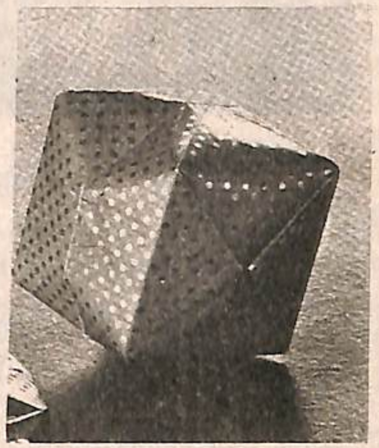

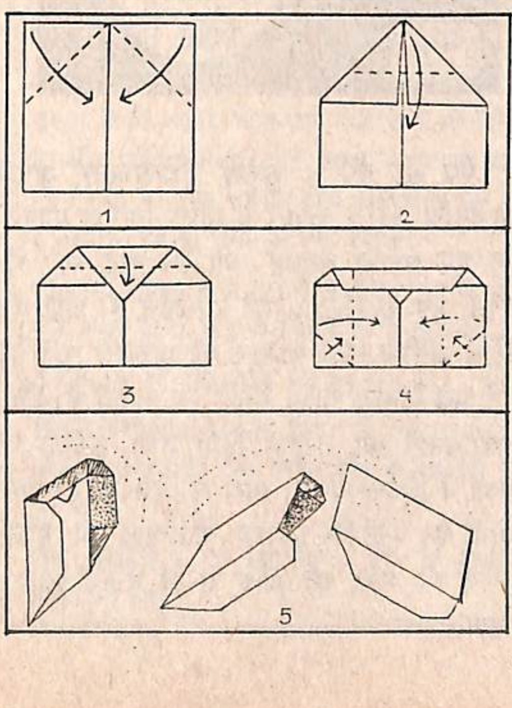

कलाबाज़

कलाबाज़ी मारते इस खिलौने को देखकर तुम्हें बहुत मज़ा आएगा।

1. 10 से.मी. वर्ग का थोड़ा सख़्त मोटा कागज़ लो। उसके दोनों ऊपरी कोनों को मध्य रेखा तक मोड़ो।
2. ऊपर के बिंदु को मध्य रेखा से कुछ नीचे लाकर मोड़ो।
3. मुड़े हुए हिस्से को दोहरा मोड़ो।
4. पहले दोनों सिरों को मध्य तक मोड़ो-फिर खोल कर कोनों को मोड़ो।
5. मॉडल को अब सीधा खड़ा करके छोड़ो। देखो यह कैसे कलाबाज़ी लगाता है। ज़रा सोच के बताओ कि भला क्यों यह कलाबाज़ी लगाता है।

('खेल खिलौने' किताब से)

चर्चा किताबों की

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद यानी एनसीएसटीसी (विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग) नई दिल्ली, ने स्वयं करो श्रृंखला के अंतर्गत तीन किताबें प्रकाशित की हैं।

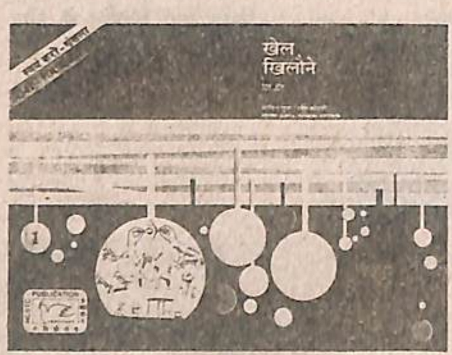

खेल और खिलौने : अरविंद गुप्ता/ रमेश कोठारी (मूल्य 15/- रुपए) में 22 विभिन्न छोटे खिलौने बनाना बताया गया है। ये खिलौने काग़ज़, धागा, गत्ता, आईसक्रीम के चम्मच, सोड़ा वाटर बोतल के ढक्कन, बटन आदि से बनते हैं। बनाने का तरीक़ा समझाने के लिये चित्र हैं। साथ ही विवरण हिंदी- अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में है।

इस श्रृंखला की दूसरी किताब है- ***पत्तियों का चिड़ियाघर : अरविंद गुप्ता द्वारा*** संकलित (मूल्य 10/- रुपए)। पेड़ों की पत्तियों से जानवरों-पक्षियों आदि की सुंदर आकृतियां बन सकती हैं, यह हम सोच भी नहीं सकते। इस किताब में कछुए, मेढ़क, उल्लू, तितली, शेर, हाथी, मुर्गा आदि जीव जंतुओं की विभिन्न पत्तियों के मेल से बनी ऐसी ही आकृतियां हैं। बच्चे इनकी देखा-देखी पत्तियों से और भी तमाम आकृतियां बना सकते हैं।

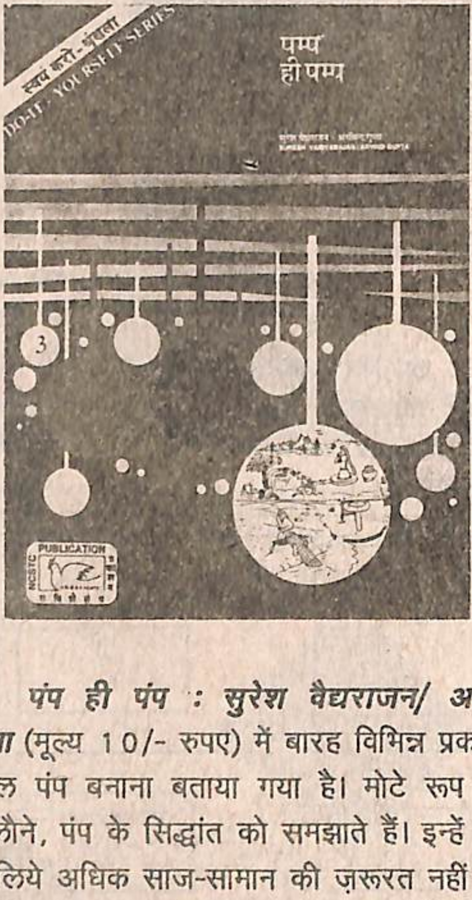

पंप ही पंप : सुरेश वैद्यराजन/ अरविंद गुप्ता (मूल्य 10/- रुपए) में बारह विभिन्न प्रकार के सरल पंप बनाना बताया गया है। मोटे रूप में ये खिलौने, पंप के सिद्धांत को समझाते हैं। इन्हें बनाने के लिये अधिक साज-सामान की ज़रूरत नहीं है। ये घर में पड़े कबाड़ से ही बनाए जा सकते हैं। किताब में पंप बनाने का तरीक़ा हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं में दिया गया है। साथ में चित्र भी हैं। किताब उपयोगी है। हालांकि किताब बोलचाल की भाषा में है, फिर भी भाषा को और सरल बनाए जाने की गुंजाइश है।

समय की बात

यह कौन है जो कल से चल, आज आ रहा है?
हर पल पुराने पल को पीछे हटा रहा है?

कलियों से फूल, फूलों से फल पका रहा है।
बच्चे जवान करके बूढ़े बना रहा है।

मथकर सरोवरों को काई उगा रहा है।
मछली की धीरे-धीरे टांगें लगा रहा है।

मेंढक को पंख देकर उड़ना सिखा रहा है।
बंदर की पूंछ घिसकर बंदा -[1] बना रहा है।

न शक्ल है न सूरत पर याद आ रहा है।
उसकी कहानियां को इतिहास गा रहा है।

1 बंदा = आदमी

यह कविता-पहेली एनसीएसटीसी की बाल श्रृंखला के तहत जारी किताब ***जानो और बूझो : बलदेवराज दावर*** (मूल्य 5/- रुपए) में है। यह कविता समय पर है। इसके अलावा पृथ्वी, हवा, धूप, सूरज, पेड़ आदि विषयों पर भी कविता-पहेलियां हैं। हर कविता के अंत में एक प्रश्न पूछा गया है, जिसका उत्तर कविता के आधार पर देना है। हालांकि वहीं नीचे उत्तर भी दिया गया है।

माथापच्ची उत्तर : अप्रैल, 93 के

1. शफ़ीक और अशोक ने आने-जाने वालों की एक ही संख्या गिनी। शफ़ीक आने-जाने वाले दोनों को गिनता है। और अशोक सिर्फ़ अपने सामने से गुजरने वालों को गिनता है। चूंकि शफ़ीक दोनों दिशाओं में घूम रहा है इसलिए वह भी सभी को गिन रहा है।
4. सौ रुपये के खुल्ले 50 नोटों में- एक रुपए के 45, बीस रुपये के 2 और पांच रुपये के 3 नोट थे।
6. खटिया पर सो रहा व्यक्ति मुन्नू का बेटा है।
7. सलीम इंस्पेक्टर है और ठिगना है। मोहन लंबा है और हवलदार है। अब हरीश क्या है यह तुम तय कर लो।

वर्ग पहेली-23 का हल जून, 93 के अंक में प्रकाशित होगा।

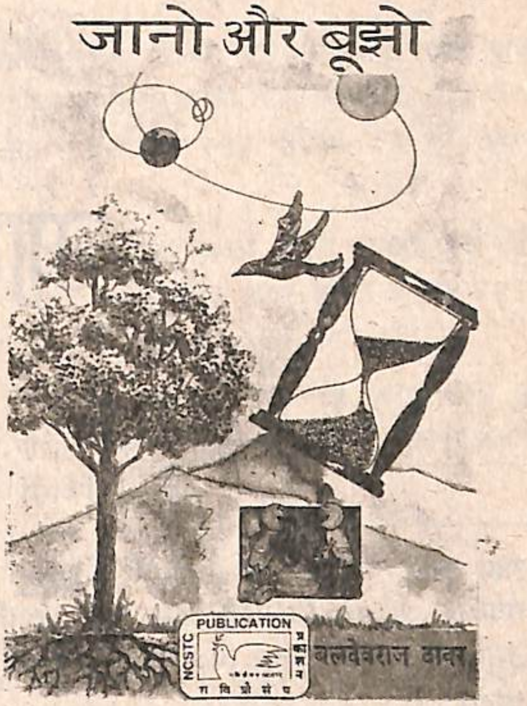

जैसा कि यहां दी गई कविता-पहेली से पता चलता है, भाषा सरल तथा बोलचाल की है। हालांकि इन पहेलियों में कविता कम, तुकबंदी अधिक है (यह किताब में छपी प्रस्तावना में भी स्वीकार किया गया है।) फिर भी वे विज्ञान के कुछ तथ्यों को बच्चों तक पहुंचाने में सफल कही जा सकती हैं।

हर पन्ने पर पहेली से संबंधित चित्र भी हैं।

चारों किताबों के प्रकाशक : राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद, टैक्नोलॉजी भवन, नया मैहरोली मार्ग, नई दिल्ली -110016

❑ राजेश उत्साही

इस कालम में हम बच्चों के लिए प्रकाशित नई किताबों का परिचय देते हैं। लेखक/प्रकाशक आदि चर्चा के लिए अपनी किताब की दो प्रतियां चकमक के पते पर भेजें।

माथापच्ची

(1)

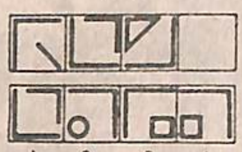

यहां ऊपर के खाने के चित्रों में क्रमानुसार कुछ बदलाव आ रहे हैं। परंतु चौथा खाना ख़ाली है। इसके लिए नीचे के चार चित्रों में से कोई एक चित्र छांटो।

(2)

मिंटू और मंजू बेर खा रहे थे। मंजू ने मिंटू से कहा, "अगर तुम मुझे एक बेर दे दो तो हम दोनों के पास बराबर बेर हो जाएंगे।"

मिंटू ने कहा, "लेकिन अगर तुम मुझे एक बेर दे दो तो मेरे पास तुमसे दुगने बेर हो जाएंगे।"

बेर तो उन्हें खाने दो। तुम यह बताओ कि उनके पास कितने-कितने बेर हैं?

(3)

बिट्टी और सल्लो एक ही स्कूल में पढ़ती हैं और सुबह साथ-साथ पैदल स्कूल जाती हैं। सल्लो का क़द बिट्टी से काफ़ी ऊंचा है।

एक दिन स्कूल जाते हुए बिट्टी ने ग़ौर किया कि उसके तीन क़दम सल्लो के दो ही क़दम के बराबर थे। उसने सल्लो को यह बात बताई और वे दोनों बाएं पांव से शुरू करके एक साथ चलने लगीं।

ऐसे ही चलते हुए वो दोनों तो स्कूल पहुंच गईं। तुम यह बूझो कि बाएं पांव से चलना शुरू करने के कितने क़दमों के बाद दोनों के दाएं पांव एक साथ उठे होंगे?

(4)

मान लो कि तुम एक रेलगाड़ी के डिब्बे में बैठे हो और गाड़ी 36 कि.मी. प्रति घंटे की रफ़्तार से चल रही है। तुम डिब्बे में ऐसी छलांग लगाते हो कि हवा में 1 सेकंड रहने के बाद तुम्हारे पांव फिर डिब्बे पर पड़ते हैं। छलांग लगाने के बाद तुम उस जगह से कितनी दूर होगे, जहां तुम छलांग लगाने से पहले खड़े थे? यह दूरी किस तरफ़ होगी, रेल के इंजन की तरफ या पीछे की ओर?

(5)

एक मेढ़क कुएं में गिर गया, कुंआ 30 मीटर गहरा था। कुएं से निकलने के लिए वह हर रोज़ 3 मीटर ऊपर चढ़ता पर शाम को 2 मीटर नीचे फिसल जाता। बताओ कुएं से निकलने में उसे कितने दिन लगेंगे?

(6)

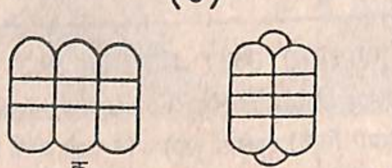

इन छह आकृतियों में से पांच आकृतियों में दो समानताएं हैं। छठी बेमेल आकृति कौन-सी है यह तुम्हें ढूंढ़ना है। पहले समानताएं ढूंढो।

सोचकर जवाब दो!

कल्लू की बकरी खो गई थी। ढूंढते-ढूंढते वह एक अनजान गांव जा पहुंचा। अजीब-सा गांव था। वहां दो बस्तियां थीं। एक बस्ती के लोग हमेशा सच बोलते थे, दूसरी के हमेशा झूठ।

कल्लू की मुश्किल यह थी कि वह अपने गांव का रास्ता भूल गया था। इस गांव से दो सड़कें जाती थीं। पर उसके गांव की कौन-सी है? यह किससे पूछे। उसे यह भी नहीं मालूम था कि कौन झूठ बोल रहा है और कौन सच?

बहुत देर तक माथापच्ची करने के बाद उसने एक गांव वाले से केवल एक सवाल पूछा। और जो जवाब मिला, उससे कल्लू को अपने गांव की सड़क भी पता चल गई।

क्या तुम बता सकते हो, क्या था वह सवाल?

(7)

चार-पांच महीने भटकने के बाद आख़िरकार पारो को दो कंपनियों में अच्छी नौकरियां मिल गईं। दोनों कंपनियां 12,000 रुपए प्रतिवर्ष देने को तैयार थीं।

इसके अलावा पहली कंपनी अगले पांच वर्षों तक 500 रुपए वार्षिक तथा दूसरी कंपनी 125 रुपए प्रति छह महीने बढ़ाने को तैयार थी।

क्या तुम बता सकते हो कि अगर दोनों ही काम पारो की रुचि के हों तो कौन-सी नौकरी उसके लिए फ़ायदेमंद रहेगी?

वर्ग पहेली- 25

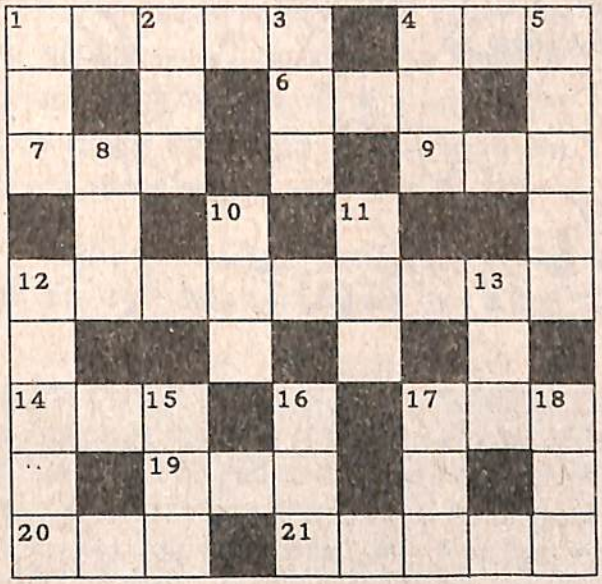

संकेत : बाएं से दाएं

1. बदलाव (5)
4. अब के बीच आधा दल (3)
6. कपड़े पर बेल-बूटे (3)
7. विवाह के लिए तय किया गया दिन (3)
9. तारने वाला (3)
12. समय पर काम करने की नसीहत देने वाली एक लोकोक्ति (2, 2, 1, 2, 2)
14. इधर कुआं तो उधर .... (3)
17. चिन्ह (3)
19. जहां धरती और आकाश आपस में मिलते दिखाई देते हैं (3)
20. प्रजा (3)
21. जब किसी चीज़ के बंटवारे में गड़बड़ हो तो बंटवारे को कहते हैं (3, 2)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. गुजरात में बनाया जाने वाला एक तरह का रेशमी कपड़ा (3)
2. कै (3)
3. नक़ाब में सेंध (3)
4. न देने वाला (3)
5. जो बना रहे (5)
8. लकड़ी, रबर और चमड़े से बना एक साधारण खिलौना, जिससे निशाना लगाया जाता है (3)
10. अरे फबता है में धोखा (3)
11. दबदबा (3)
12. लंबे समय से बेकार पड़ी भूमि जो जोती न जा सके (2,3)
13. मन चंगा तो.... में गंगा (3)
15. जिसकी रक्षा की जा रही हो (3)
16. अब में आधा जल (3)
17. तेज, तीखा (3)
18. कपकपाहट में दरवाज़ा (3)

■ वर्ग पहेली के सर्वशुध्द हल भेजने वालों को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से नहीं काटें। उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली-25 का हल अगस्त, 93 के अंक में देखें।

जंगलनामा

पिछले दो अंकों में तुमने पढ़ा कि तराई के जंगल जहां खत्म होते हैं, वहां परना नदी बहती है। नदी के एक तरफ इंसानों की बस्ती है और दूसरी तरफ जंगल। पिछले कुछ दिनों से जंगल में एक अजीब तरह की दहशत छाती जा रही थी। बस्ती के लोग नदी पर एक पुल बना रहे थे। जंगल में तरह-तरह की चर्चाएं थी। शेर ने सब लोगों से बातचीत करके एक कमेटी बनाई। चीते से कहा कि वह पुल पर नज़र रखे। एक रोज चील ने ख़बर दी कि बस्ती में बड़े-बड़े पिंजरे और बंदूकें लाई गई हैं। बंदूकें किस घर में हैं, यह पता करने के लिए चूहों को भेजा गया, पर वे मारे गए। फिर एक योजना बनाकर सुनैनी हिरनी को भेजा गया, लेकिन वह भी पकड़ी गई। इस योजना की जानकारी शेर को नहीं थी। जब सुनैनी के पकड़े जाने की ख़बर उसे मिली तो वह बहुत नाराज़ हुआ। फिर शेर ने एक योजना बनाई। अब आगे पढ़ो.....

"हम किसी जानवर का ख़ून करना नहीं चाहते।" शेर ने बाक़ी प्रोग्राम समझाया।

"हाथी जब दरवाज़े पर पहुंच जाए तो पांच सौ चिमगादड़ थाने के बाहर सिपाहियों पर झपटेंगे ताकि वे लोग घबराकर अंदर चले जाएं और दरवाज़े खिड़कियां बंद कर लें। इस तरह दरवाज़ा टूटने की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचेगी। दरवाज़ा टूटने के बाद डेढ़ हज़ार जुगनू गोदाम में घुसकर रोशनी करेंगे। बंदूकों और कारतूसों की पेटियां तोड़ने के बाद उन्हें हाथी के पांव तले कुचल दिया जाएगा। रात की रात ये सारा काम पूरा करके सब के सब सुबह होने से पहले वापस आ जाएंगे।"

सब ने मिलकर शेर की जय-जयकार बोली।

सब कुछ प्लान के मुताबिक हुआ। चींटियों के दस्तों ने हाथी को काबू में किया और बिना शोर मचाए उसे हवेली से निकालकर ले गए। चिमगादड़

ठीक वक़्त पर थाने में दाखिल हुए और तमाम सिपाहियों को बौखला दिया। जुगनूओं की रोशनी से गोदाम में दिन की तरह उजाला हो गया। उनके लीडर जुगनू सिंह को बहुत से जुगनू बुझाने पड़े। बंदूकों और कारतूसों को कुचल-कुचलकर उनका मलबा बना दिया गया। लेकिन ये सब करते-करते सुबह हो गई और थका हारा महाबली जब गोदाम से निकल रहा था तो सुबह की ड्यूटी पर आए थानेदार ने उसे देख लिया।

जंगल के हमलावर वापस उड़ गए थे। चींटी रानी अपना दस्ता लेकर वापस जा रही थी।

थानेदार सीधा गोदाम में आया और वहां की हालत देखकर हाथी के पीछे भागा। हाथी के माथे से पसीना टपक रहा था। थकावट के मारे वह लड़खड़ा रहा था। थानेदार ने समझा हाथी पागल हो गया है। वह ज़रूर बस्ती में जाकर तोड़-फोड़ करेगा। उसने फ़ौरन पिस्तौल निकाली और हाथी के सर में पांच की पांच गोलियां दाग दीं।

एक लंबी दहाड़ मारकर हाथी ज़मीन पर गिर पड़ा और देखते-देखते उसने तड़पकर जान दे दी।

यह सारी ख़बर जब जंगल में पहुंची, तो जंगल के हाथी प्रसाद की आंखों में आंसू आ गए। महाबली उसकी बड़ी बुआ का लड़का था।

अगले दिन जंगल में फिर सन्नाटा रहा लेकिन उसमें ख़ौफ़ कम और हिम्मत ज़्यादा थी। जानवर अपनी पहली चाल में कामयाब हो गए थे, लेकिन बस्ती की तरफ से अब कैसे हमला होगा कोई नहीं जानता था। पुल पर बक़ायदा काम चल रहा था और लगता था दो-चार दिनों में वह भी पूरा हो जाएगा।

कमेटी वाले सारा दिन टीले पर किसी ख़बर के आने का इंतज़ार करते रहे। सफ़ेदा चील कई बार जंगल तक आकर वापस चली गई। कागाराम की दूर तक कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी।

आहिस्ता-आहिस्ता शाम ढली और रात हो गई।

अगला दिन और अगली रात भी वैसे ही गुज़री। पुल तकरीबन जंगल वाले किनारे तक आ पहुंचा।

चीता रात-रात भर जागकर पहरा देता। एक रात उसे अपने पास ही किसी के रोने की आवाज़ सुनाई दी। पास की झाड़ियों में जाकर देखा तो एक जवां-सा हिरन दुबका बैठा था।

"कौन हो बेटा और यहां क्या कर रहे हो?" चीते ने पूछा।

"मैं सुनैनी का बेटा हूं। मेरी मां उस तरफ पकड़ी गई है। मैं उसके पास जाना चाहता हूं। उल्लू मियां ने बताया है कि वह चौधरी के घर में है। मैं चौधरी से कहूंगा मुझे रख ले, मेरी मां को छोड़ दे। मुझे वहां ले चलो।"

चीते को सुनैनी के बेटे पर तरस आ गया।

"देख बेटा! चौधरी तुझे भी रख लेगा और तेरी मां को भी नहीं छोड़ेगा।"

"कोई बात नहीं। मैं मां के पास रहकर उसका ख़्याल तो रख सकता हूं।"

"ऐसा नहीं होगा बेटा। वह चिड़ियाघर के लिए बेच देगा तुम्हें, और कहीं दोनों को अलग-अलग बेच दिया तो क्या करोगे?"

सुनैनी का बेटा सुचाल चुप हो गया। लेकिन उसके आंसू बहते रहे। कुछ देर ख़ामोश रहने के बाद चीते ने पूछा, "तुमने शेर से क्यूं नहीं कहा? आख़िर वह जंगलवालों ही के लिए तो उस तरफ गई थी।"

सुचाल ने सर झुका के धीमे से कहा, "राजा के पास जाने की हिम्मत नहीं हुई।"

"चल मेरे साथ।"

चीता सुनैनी के बेटे को लेकर शेर के पास गया।

लोमड़ी बाहर पहरे पर बैठी हुई थी। उसने बताया राजा दीमक के साथ एक लंबी मीटिंग करने के बाद अभी-अभी आराम करने गया है।

"दीमक?" चीते ने हैरत से पूछा, "वह कौन है?"

"जंगल में रहते हो और दीमक को नहीं जानते? दीमक चाहे तो रात की रात में सारा जंगल खा जाए। वह तो लोहा, पत्थर, लकड़ी सब खा जाती है।"

"शेर को दीमक से क्या काम पड़ गया?"

इन लोगों की आवाज़ें सुनकर शेर ग़ार से बाहर आ गया। पूछा, "क्या है? पुल की निगरानी छोड़कर तुम क्यूं आए?"

मिज़ाज से तो गुस्सैल था ही चीता, चिढ़कर बोला, "क्या फ़ायदा उस पुल पर पहरा देकर। वह तो कल तक पूरा हो जाएगा।"

शेर मुस्करा कर बोला, "पूरा नहीं, कल ख़त्म हो जाएगा। मैंने आज ही दीमक को हुक्म दिया है। कल तक उस पुल को चट करके उसके खोखले टुकड़े पानी में बहा देगीं। सिर्फ़ रात ही रात की बात है। जाओ और अपनी जगह पर पहरा दो। कोई आज रात इधर आने की कोशिश करे तो हमें ख़बर करना। तुम्हें मालूम नहीं हाथियों के दल, भेड़ियों की टोलियां, चिमगादड़ों के झुंड, भालू और लोमड़ियों के गिरोह किस तरह रात-रात भर जागते हैं। एक आवाज़ पर मर मिटने के लिए तैयार बैठे रहते हैं।" यह कह कर शेर वापस ग़ार में चला गया।

चीता कुछ हैरान कुछ परेशान पुल पर वापस लौट आया। सुचाल उसके साथ-साथ ही था। वह अभी तक चुपचाप सिसक रहा था। अचानक चीता उठा और उसका हाथ पकड़कर बोला, "चल पुल के उस पार चलते हैं। पूल टूटने से पहले हम सुनैनी को वापस लेकर आ जाएंगे, चल।"

आन की आन में उसने फ़ैसला किया और सुचाल को साथ लेकर उधर बस्ती में पहुंच गया।

दबे पांव सुनसान गलियों से गुज़रते हुए दोनों चौधरी की हवेली तक पहुंचे। इतनी बड़ी हवेली में कैसे पता चलता कि हिरनी किस जगह बंधी है। दीवार के ऊपर से एक बिल्ली गुज़र रही थी। चीते की नज़र उस पर पड़ गई। फ़ौरन दुम से पकड़कर नीचे खींच लिया। बिल्ली की तो घिग्घी बंध गई। कान खींच के चीते ने चेतावनी दी, "आवाज़ की तो तेरी सारी नस्ल ख़त्म कर दूंगा। जल्दी बता चौधरी ने सुनैनी को कहां बांधा है?"

"अस्तबल के पीछे एक कोठरी है। उसी में बंद कर रखा है।"

"उस कोठरी का रास्ता किस तरफ़ है?"

"मेरे साथ आओ, मैं ले चलती हूं।"

कोठरी तक पहुंचे तो देखा दरवाज़े पर एक भारी ताला पड़ा है। खिड़की अंदर से बंद थी। सिर्फ़ एक ही रास्ता था। ऊपर का रोशनदान। चीते ने बिल्ली से कहा, "तू ऊपर से कूद के अंदर जा और खिड़की का दरवाज़ा खोल दे। बाक़ी काम मैं ख़ुद कर लूंगा।"

बिल्ली ने ऐसा ही किया। खिड़की खुलते ही चीता अंदर गया और रस्सी तोड़ के सुनैनी को बाहर ले आया। सुनैनी सुचाल को देखते ही पागल हो उठी। उसे चूमने चाटने लगी। लेकिन चीते ने फिर चेतावनी दी, "जल्दी करो और बस्ती से निकल चलो। वरना पकड़े जाएंगे।"

बिल्ली ने इजाज़त चाही, "मैं जाऊं?"

चीते ने इजाज़त देते हुए कहा, "ख़बरदार! आज रात की बात की किसी को कानों-कान ख़बर न हो।"

बिल्ली ने वादा किया और चली गई। लेकिन उसने गद्दारी की। उछलती-कूदती चौधरी के कमरे में पहुंची और गुलदान गिरा के उसे जगा दिया। चौधरी जागा तो वह बालकनी में जाकर खड़ी हो गई, ताकि चौधरी बाहर निकल आए।

चीता, सुनैनी और सुचाल नीचे गली से गुज़र रहे थे। वे ऐसे दीवार से लगते हुए जा रहे थे कि बालकनी से किसी की नज़र उन पर नहीं पड़ सकती थी। लेकिन उस वक़्त बिल्ली की म्याऊं सुन कर चीते ने ऊपर देखा और उसकी नज़र चौधरी पर पड़ी। बालकनी में खड़ा चौधरी अंगड़ाई ले रहा

था।

पल की पल में चीते का ख़ून खौलने लगा। वही था जिसने उसके मां-बाप का ख़ून किया था और उनकी खाल निकलवाकर एक अंग्रेज़ को बेच दी थी। बदले का इरादा उसके दिमाग़ में भिन्नाने लगा। उसने सुनैनी और सुचाल से कहा, "जितनी तेज़ भाग सकते हो भागो और पुल पार करके जंगल में पहुंच जाओ। मैं थोड़ी देर में आता हूं।"

"लेकिन तुम कहां जा रहे हो?"

"ज़्यादा सवाल मत पूछो और जो कहता हूं वह करो!"

सुनैनी और सुचाल को भगाकर चीते ने फिर बालकनी की तरफ देखा। उसकी आंखों में ख़ून उतर आया। दबे पांव वह दीवार पे चढ़ा। दीवार से पेड़ पर कूदा और पेड़ से सीधा बालकनी में! चौधरी वापस अपने बिस्तर पे जा चुका था..।

अचानक उस की नज़र चीते की चमकती हुई आंखों पर पड़ी। उसकी चीख़ निकल गई। चीता कूद पड़ा उस पर और एक ही झपट्टे में उसका काम तमाम कर दिया।

सुनैनी और सुचाल पुल की दूसरी तरफ पहुंचकर चीते का इंतज़ार करने लगे। इंतज़ार करते-करते सुबह हो गई, लेकिन चीता नहीं पहुंचा। दोनों की फ़िक्र बढ़ गई। घबराकर दोनों ने फ़ैसला किया कि शेर को ख़बर कर दें और रात जो कुछ हुआ था, उसकी पूरी-पूरी ख़बर दे दें।

शेर ने सुना तो सन्नाटे में आ गया, "ये क्या हो गया! चीते ने ऐसी ग़लती क्यूं की। मुझे हमेशा से यही डर था। उसका गुस्सैल मिज़ाज उसे किसी दिन ले डूबेगा।"

बहुत देर तक इधर से उधर टहलता रहा।

उसने सफ़ेदा चील को दौड़ाया, "जल्दी से चीते की ख़बर लेकर आओ। वह कहां है और किस हाल में हैं?"

ख़बर आग की तरह सारे जंगल में फैल गई। जंगल के पशु-पक्षी फ़िक्रमंद हो गए। चीता अपनी नस्ल की आख़िरी निशानी था। जंगल की शान था वह! एक बार फिर सारे जंगल में वही सन्नाटा छा गया।

सफ़ेदा चील ने आकर ख़बर दी, "चौधरी मारा गया और चीता पकड़ा गया है। वह बुरी तरह ज़ख्मी हो चुका है। उसे बड़े पिंजरे में बंद करके आज ही शहर के चिड़ियाघर में भेजा जाएगा। उसके लिए दो घोड़ों की एक तेज़ रफ़्तार घोड़ागाड़ी तैयार की जा रही है!"

लोमड़ी ने राय दी कि फ़ौरन मीटिंग बुलाई जाए और किसी तरह चीते को छुड़ाने का बंदोबस्त किया जाए!

शेर ने गुस्से से हुंकारकर उसकी राय को रद्द कर दिया।

"तो क्या करोगे?"

"मैं ख़ुद जाऊंगा उसे छुड़ाने! ये सोच-विचार का वक़्त नहीं, अमल का वक़्त है।"

शेर फ़ौरन पुल की तरफ चल दिया।

पुल पर पहुंचा। पुल टुकड़ों में गल के नदी में गिरता जा रहा था। दीमक अपना काम पूरा कर चुकी थी। लेकिन शेर के कदम एक पल के लिए भी रुके नहीं वह फ़ौरन पानी में कूद गया। जंगल वाले देखते के देखते रह गए।

नदी पार करके शेर जब बस्ती में दाख़िल हुआ तो सारी बस्ती में भगदड़ मच गई। लोग भाग-भागकर घरों में घुसने लगे। सफ़ेदा चील लंबी सीटी जैसी आवाज़ करती ऊपर उड़ रही थी और शेर को रास्ता बता रही थी।

थाने के बाहर वाले मैदान में घोड़ागाड़ी तैयार खड़ी थी। पिंजरा ऊपर रखा जा चुका था। चीते को देखने के लिए भीड़ जमा थी।

शेर की दहाड़ सुनते ही सारी भीड़ तितर-बितर हो गई। घोड़ों के होश गुम हो गए। वे

बे-तहाशा भाग लिए। शेर ने पीछा किया।

गली-कूचों में तोड़-फोड़ करते घोड़े नदी के साथ-साथ जाती सड़क पर हो लिए। उनका रुख शहर की तरफ़ था। आख़िर एक मोड़ पर शेर ने उन्हें धर लिया। एक घोड़ा तो शेर को छलांगते देख कर ही बेहोश हो गया और दूसरा तीन टांगों पर लड़खड़ाता अपनी जान बचाकर भाग खड़ा हुआ। मुंह से चबाकर शेर ने पिंजरे की सलाख़ों को चीर के रख दिया और चीते को आज़ाद करा लिया।

चीता नीम-गशी की हालत में था। शेर ने उसे कंधों पर लिया और नदी में कूद पड़ा। नदी के दूसरे किनारे पर बाक़ी जानवर भी पहुंच गए।

सब के मुंह से एक ही बात निकल रही थी,

"जंगल का राजा सचमुच जंगल का राजा है।"

चीते की हालत डूबती ही जा रही थी। उल्लू मियां ने बहुत इलाज बताए लेकिन कोई काम न आया। बहुत दौड़-धूप के बाद भी तीन रोज़ बाद चीते ने जान दे दी!

उसके अगले ही दिन की बात है। बस्ती से कुछ लोग कश्ती लेकर जंगल वाले किनारे पर आए। उनमें सालेम अली नाम का एक बूढ़ा-सा शख़्स भी था, जो पंछियों से बहुत प्यार करता था। वे लोग अपने साथ एक लंबा सा बोर्ड लेकर आए थे, जिस पर लिखा था, "जंगल की ज़िंदगी इंसानी ज़िंदगी की तरह ही क़ीमती है, इसे बचाना हमारे देश का कर्तव्य है।" (समाप्त)

❑ गुलज़ार

सभी चित्र : वैशाली श्रीवास्तव

बिंदु
साहू
मैं तुम्हारे घर भोजन पर आमंत्रित हूं। शर्त यह है कि मैं पेट भर खाऊंगा।
जानती हो, डेढ़ सौ पूरियों, सात प्रकार की तरकारियों और सौ लड्डुओं से मेरा पेट भरता है। दान दक्षिणा भी तगड़ी हो। और हां मुझे हरा रंग खूब भाता है, इसका भी ध्यान रहे।
आप सादर आमंत्रित हैं, पंडितजी। आपकी मांग और रुचि का पूरा ध्यान रखा जाएगा।
पंडितजी, आपको हरा रंग क्यों अच्छा लगता है?
हरे रंग का आंखों पर प्रभाव ठंडक देने वाला होता है।
दूसरे दिन -
अरे वाह!!
दीवालों पर हरा रंग.. परदे भी हरे हरे, हरी फर्श... चटाई, पीढ़ा भी हरे...
गिलास, लोटे भी हरे.. थाली भी हरी... और भोजन को हरे कपड़े से ढका गया है। वाह!!
भोजन पर से कपड़ा हटाइए, पंडितजी। आप यहां भी निराश नहीं होंगी।
यह क्या ???
घास!

दोनों चित्र : कल्याणी, पांच वर्ष, दिल्ली

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत.भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/93

पलाश गांगुली, सात वर्ष, भोपाल, म. प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना